CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काशी में जैन धर्म

Jainism in Varanasi

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

डॉ. विवेकानन्द जैन

Dr. Vivekanand Jain

एवं

डॉ. आनन्द कुमार जैन

Dr. Anand Kumar Jain

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

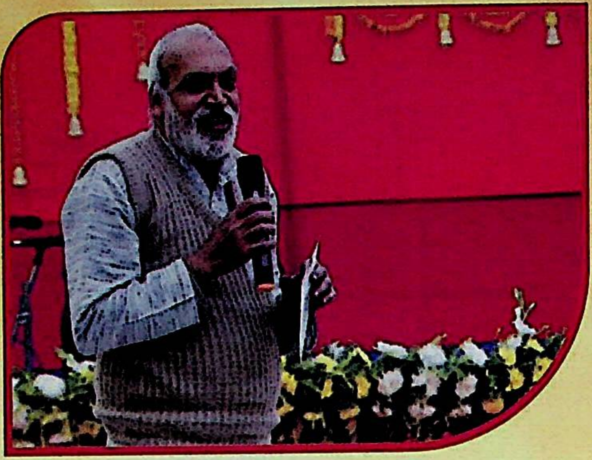

'काशी में जैन धर्म' पुस्तक वाराणसी आने वाले सभी यात्रियों के लिए एक सहायिका की तरह उनकी यात्रा को सुगम बनाने में सहयोग करेगी। इस पुस्तक में वाराणसी से संबंधित जैन तीर्थंकरों की जन्म स्थली की जानकारी दी गई है। इसके साथ ही अन्य सभी प्रमुख जैन मंदिरों, धर्मशालाओं तथा जैन धर्म से सम्बंधित शैक्षणिक संस्थानों की भी जानकारी दी गई है।

इस पुस्तक को 'इनू मेहता एजुकेशन सपोर्ट' के माध्यम से निःशुल्क उपलब्ध कराया जा रहा है। विश्वास है कि यह सचित्र पुस्तिका आपको पसंद आयेगी।

मुकुल राज मेहता

This pictorial book 'Jainism in Varanasi' will act as a reference book for all the travelers visiting Varanasi to make their journey smooth. This book contains the relevant information about the birthplaces of Jain Tirthankaras in Varanasi. Along with this, information about all other major Jain temples, Dharamshalas and educational institutions related to Jainism is also provided.

This book is being made available free of cost through 'Inu Mehta Education Support'. I am sure, you will like this book.

Mukul Raj Mehta

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

14.5

काशी में जैन धर्म

Jainism in Varanasi

डॉ. विवेकानन्द जैन

Dr. Vivekanand Jain

उप-ग्रन्थालयी

केन्द्रीय ग्रंथालय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी - 221005

एवं

डॉ. आनन्द कुमार जैन

Dr. Anand Kumar Jain

वरिष्ठ सहायक प्राध्यापक

जैन-बौद्धदर्शन विभाग

संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी - 221005

Published with financial assistance for free distribution from

INU MEHTA EDUCATION SUPPORT

C/o Prof. Mukul Raj Mehta

Satvik Bhavan

House No. 9-A, Main Road, Mahamanapuri Colony,

Varanasi – 221005

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काशी में जैन धर्म

Jainism in Varanasi

Publisher :

Dr. Vivekanand Jain

Address : A3/21 Gopalkunj, Naria

Varanasi – 221005 India

ISBN : 978-93-341-4900-5

For free distribution only

© Dr. Vivekanand Jain and Dr. Anand Kumar Jain, 2024

CC BY- NC : Any part of the book can be used for non commercial use.

Year of publication : 2024

Vir Nirwan Samvad : 2551

For Feedback:

Dr. Vivekanand Jain +91 9450538093

Email: vivekanandofdigora@gmail.com

Dr. Anand Kumar Jain +91 9571660887

Email: anandjain2007@gmail.com

Printed at: Shree Mahavir Press, Varanasi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

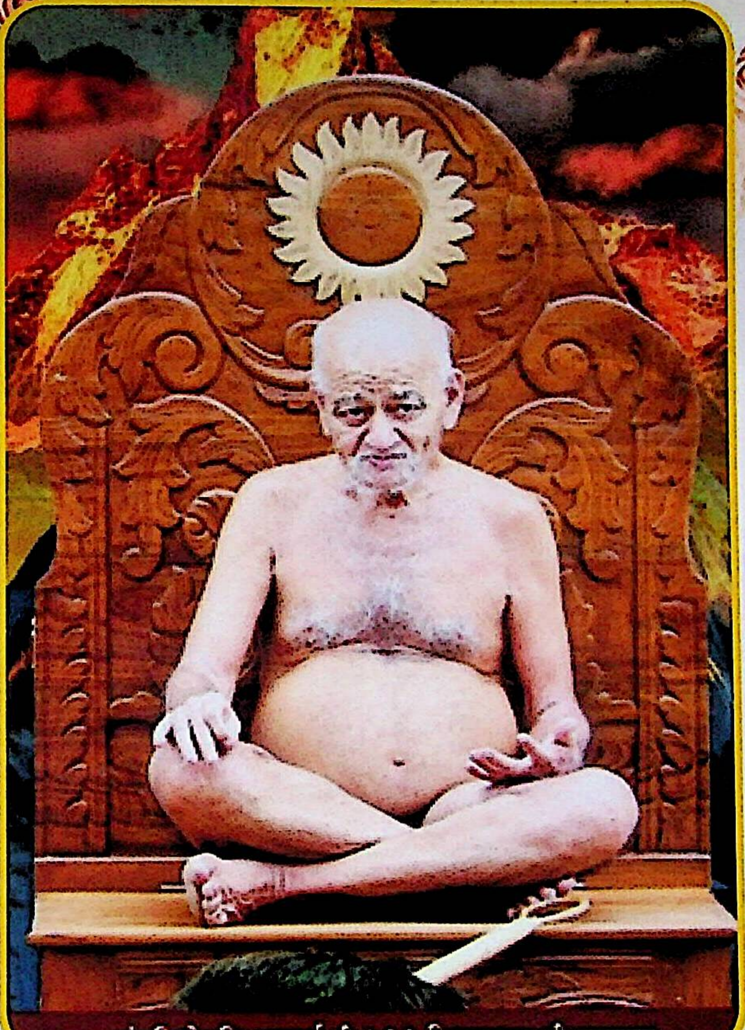

संतशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

सदी के महान जैनाचार्य संत शिरोमणि 108 श्री विद्यासागर जी महाराज को सादर समर्पित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनुक्रम

Contents

1. समर्पण : आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज
2. प्राक्कथन : प्रो. कमलेश कुमार जैन — v - vi
3. अपनी बात — vii - viii
4. वाराणसी परिचय — 01 - 02
5. तीर्थंकर जन्म स्थलियाँ — 03 - 19
   - भगवान सुपार्श्वनाथ की जन्म स्थली
   - भगवान चंद्रप्रभ की जन्म स्थली
   - भगवान श्रेयांसनाथ की जन्म स्थली
   - भगवान पार्श्वनाथ की जन्म स्थली
   - खड्गसेन उदयराज जैन पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, भेलुपुर
6. तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली — 20
7. वाराणसी के अन्य प्रमुख जैन मंदिर — 21 - 29
   - सन्मति जैन निकेतन, नरिया
   - श्री अजितनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, खोजवां
   - श्री बिहारी लाल दिगम्बर जैन मंदिर, मैदागिन
   - पंचायती दिगम्बर जैन मंदिर, बुलानाला
   - चैत्यालय : श्री दिगम्बर जैन मंदिर, भाट गली, गोलघर, वाराणसी
   - श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर, रामघाट
8. वाराणसी के जैन संस्थान : — 30 - 41
   - स्याद्वाद महाविद्यालय, भदैनी
   - श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया
   - पार्श्वनाथ विद्यापीठ, करौंदी
   - जैन दर्शन विभाग, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय
   - जैन-बौद्ध दर्शन विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
   - दर्शन एवं धर्म विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
9. वाराणसी के प्रमुख दर्शनीय स्थल — 42
10. जैन धर्म साहित्य हेतु उपयोगी वेबसाइट — 43
11. वाराणसी : काशी मेरी शान — 44
12. भगवान पार्श्वनाथ : भजन — 45
13. संदर्भ सूची — 46
14. वाराणसी जैन-तीर्थ मानचित्र — 47

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राक्कथन

विविध संस्कृतियों की संगम स्थली काशी नगरी विश्व धरोहर के रूप में प्रख्यात है। यह नगरी प्राचीन काल से ही काशी के नाम से जानी जाती है। प्राचीन ग्रंथो में काशी, कौशल आदि जिन अठारह जनपदों का वर्णन मिलता है उसमें काशी का नाम सर्वप्रथम आता है। परवर्ती काल में काशी ही बनारस और वाराणसी आदि नामों से भी जानी जाने लगी है।

यद्यपि वरुणा और अस्सी इन दो नदियों के संयुक्त नाम से काशी का नाम वाराणसी पड़ गया है तथापि काशी और बनारस इन दो नामों में जो शब्द माधुर्य, ललित और इतिहास छुपा हुआ है वह अन्य नामों में नहीं है।

काशी मुख्य रूप से वैदिक संस्कृति का केंद्र तो है ही उसके साथ ही जैन और बौद्ध संस्कृतियां भी इसमें प्राचीन काल से वैसी ही अनुस्यूत हैं जैसे किसी स्वर्णहार में रत्नों को जड़ दिया गया हो।

काशी में जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से सप्तम् तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, अष्टम् तीर्थंकर चन्द्रप्रभ, ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ और 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ इन चार तीर्थंकरों की न केवल जन्म भूमि है अपितु इन चार तीर्थंकरों के कुल 15 कल्याणकों भी पुण्यभूमि है।

ईसा की द्वितीय शताब्दी के विद्वान आचार्य समंतभद्र का काशी में आगमन और अपने पांडित्य से जैनधर्म का डंका पीटना आदि काशी में जैन धर्म की पुष्टि करता है। ईसा की 17वीं शताब्दी में गुजरात से पैदल चलकर उपाध्याय यशोविजय जी का न्याय के अध्ययन हेतु काशी आना और लगातार 12 वर्षों तक न्याय शास्त्र का अध्ययन करना, पुनः काशी में ही शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त कर उपाध्याय एवं न्यायाचार्य की पदवी को प्राप्त करना एक असाधारण घटना है। उनकी कीर्ति को सजाने के लिए काशी में यशोविजय पाठशाला और यशोविजय ग्रंथमाला की स्थापना करना अत्यंत गौरवपूर्ण है।

इसी प्रकार मध्य प्रांत के बुंदेलखंड से ईसा की बीसवीं सदी के प्रारंभ में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काशी में अध्ययनार्थ आये हुए पूज्य क्षुल्लक गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा सन् 1905 में स्याद्वाद विद्यालय की स्थापना करना और प्रथम छात्र के रूप में उक्त विद्यालय में प्रवेश लेना, एक अन्य महत्त्वपूर्ण घटना है।

इन्हीं सब विशेषताओं से युक्त लघु पुस्तिका 'काशी में जैन धर्म' का सचित्र प्रकाशन किया जा रहा है, यह अत्यंत हर्ष का विषय है। इसके प्रकाशन से जनसामान्य को काशी में जैन धर्म के संदर्भ में संक्षिप्त जानकारी मिल सकेगी, ऐसा विश्वास है।

इस कार्य को मूर्तरूप देने के लिए डॉ. विवेकानन्द जैन एवं डॉ. आनन्द कुमार जैन ने पर्याप्त परिश्रम किया है, जो सराहनीय है। हम इन दोनों के मंगलाभ्युदय की हृदय से कामना करते हैं।

दिनांक 7.11.2024

सूर्य षष्ठी

प्रो. (डॉ.) कमलेश कुमार जैन

पूर्व विभागाध्यक्ष

जैन-बौद्धदर्शन विभाग

काशी हिंदू विश्वविद्यालय

वाराणसी

।। जैनम जयतु शासनम् वंदे भरत भारतम् ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपनी बात

सम्पूर्ण भारत देश और विदेश से जैन धर्म के अनुयायी / धर्मावलम्बी तीर्थयात्रा हेतु निरन्तर वाराणसी नगरी आते रहते हैं। तीर्थयात्री श्री सम्मेद शिखरजी जाते वक्त या सम्मेद शिखरजी की यात्रा पूरी करके कभी न कभी वाराणसी भगवान पार्श्वनाथ की नगरी में अवश्य आते हैं। इन्ही तीर्थयात्रियों की सुविधा हेतु एक सचित्र लघु पुस्तिका बनाने का विचार मन में चल रहा था जिसे वर्तमान में मूर्तरूप देने का यह एक प्रयास है।

इसमें जैन धर्म से संबंधित सभी जन्म स्थलियों (दिगंबर एवं श्वेतांबर मंदिरों) की जानकारी दी गई है। इसके अलावा जैन-विद्या एवं जैन धर्म-दर्शन की शिक्षा से संबंधित संस्थानों और पुस्तकालयों का भी विवरण इसमें दिया गया है। यह एक प्रकार से सूचना-सामग्री युक्त पिक्टोरियल बुक है। काशी के रूप अनेक हैं, जिसने जिस रूप में इसे देखा, उसे काशी उसी तरह नजर आई। काशी में सदियों से तीर्थयात्री एवं पर्यटक पूरे विश्व से आते रहे हैं और इसका वर्णन तथा गुणगान करते रहे हैं। वास्तव में काशी विविधताओं से भरी हुई एक प्राचीन जीवंत नगरी है जो कि सभी के लिए सकारात्मक धार्मिक एवं सांस्कृतिक ऊर्जा का स्थापित केंद्र है।

इस पुस्तक को बनाने की प्रेरणा हमें दर्शन एवं धर्म विभाग के प्रो. मुकुल राज मेहता से मिली। हम तीनों ने संयुक्त रूप से वाराणसी के सभी जैन मंदिरों के दर्शन हेतु एक यात्रा की और सभी जगह के फोटोग्राफ्स एकत्रित किए। अतः इस पुस्तक को इस रूप में लाने के लिए प्रो. मुकुल राज मेहता का आभार और हृदय से धन्यवाद।

श्री अमित कुमार जैन (श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान), श्री सुरेंद्र जैन (स्याद्वाद महाविद्यालय), डा. येन (मैत्री भवन) एवं डा. मनोज कुमार (बी.एच.यू.) को भी उनके द्वारा प्रदान किए गए फोटोग्राफ्स के लिए धन्यवाद करते हैं। इनका शैक्षणिक गतिविधियों में भी सदैव सहयोग रहता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग के लिए 'इनू मेहता एजुकेशन सपोर्ट' वाराणसी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। इस पुस्तक को वर्तमान स्वरुप देने में जिन सूचना स्रोतों से सामग्री ली गई है उन सभी का भी आभार एवं हृदय से धन्यवाद।

देव दीपावली, 2024
वाराणसी

डॉ. विवेकानन्द जैन
डॉ. आनन्द कुमार जैन

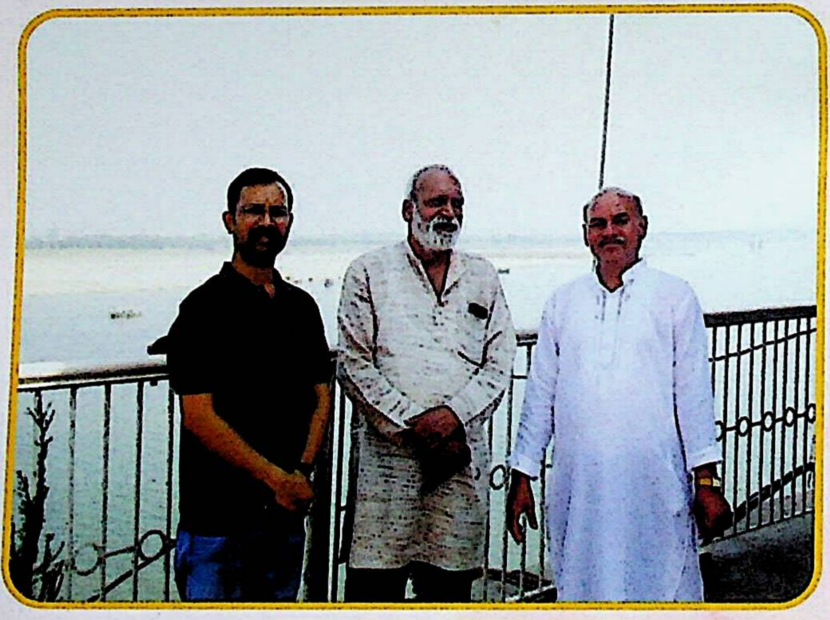

प्रो0 मुकुल राज मेहता, डॉ0 विवेकानंद जैन
एवं डॉ0 आनन्द कुमार जैन सहयात्रा के दौरान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाराणसी परिचय

विश्व के जीवंत प्राचीनतम शहरों में से एक काशी नगरी, भारत देश की धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक राजधानी है जो कि वर्तमान में वाराणसी नाम से प्रसिद्ध है। इस नगरी का हिंदू, जैन एवं बौद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए विशेष महत्त्व है। सर्वधर्म समभाव की नगरी काशी से जैन धर्म का प्राचीनतम संबंध है। जैन कथा साहित्य में अनेक घटनाक्रमों के अंतर्गत काशी का उल्लेख मिलता है। यहां अनेक जैन राजा भी हुए हैं। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से चार तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभ, श्रेयांसनाथ और पार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान आदि 15 कल्याणकों की काशी पवित्र धर्म भूमि है।

Kashi, one of the ancient living cities in the world, is India's religious, cultural and spiritual capital. The city of Varanasi has special significance for the followers of Hindu, Jain and Buddhist religions. Jainism has the oldest connect with Kashi, the city of religious harmony. Kashi has a number of references in Jain Agam literature. Many emperors were the followers of Jainism, belonging to Kashi. Out of the twenty-four Jain Tirthankaras, Kashi has been the holy land of four Tirthankaras i.e. Suparshvanath, Chandraprabh, Shreyansnath and Parshvanath regarding their 15 Kalyanaks of conception, birth, penance, knowledge etc.

वाराणसी को काशी, बनारस, वाराणसी आदि नामों से जाना जाता है। वाराणसी की प्राचीनता के बारे में मार्क ट्वेन ने कहा था कि 'बनारस इतिहास से भी पुरातन है, परंपराओं से पुराना है, किवदंतियों से भी प्राचीन है और जब इन सबको एकत्र कर दें तो उस संग्रह से भी दोगुना प्राचीन है।'

Varanasi is known by the names Kashi, Banaras, Varanasi etc. Regarding Varanasi's antiquity, Mark Twain said, 'Banaras is older than history, older than traditions, older than legends and when all these are put together, it is twice as old as that collection.'

वाराणसी स्थित राजघाट में खुदाई के दौरान प्राचीन जैन मंदिर के अवशेष प्राप्त हुए। यहां से प्राप्त सबसे प्राचीन जैन मूर्ति छठीं शताब्दी की भगवान महावीर

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की तथा आठवीं शताब्दी की प्राप्त मूर्ति भगवान पार्श्वनाथ की है। यह वर्तमान में राजकीय संग्रहालय लखनऊ में है। इसके अलावा खुदाई से प्राप्त अनेक प्राचीन मूर्तियां सारनाथ के संग्रहालय में भी सुरक्षित हैं। बनारस के जैन समुदाय के बारे में जानकारी पहाड़पुर में मिले गुप्तकालीन ताम्रपत्र (479 ई.) से भी प्राप्त होती है। बनारस में जैन समाज की निरंतरता ईसा पूर्व आठवीं सदी से लेकर आज तक बनी हुई है अतः बनारस के धार्मिक सांस्कृतिक विकास में जैन धर्म का महनीय योगदान है। वर्तमान में दिगम्बर और श्वेताम्बर जैन समाज के लगभग 600 परिवार वाराणसी में रहते हैं।

During excavation at Rajghat in Varanasi, remains of an ancient Jain temple were found. The oldest Jain idol found here is of Bhagwan Mahavira of the sixth century and the idol of Bhagwan Parshvanatha is of the eighth century. It is currently in the State Museum, Lucknow. Apart from this, many ancient idols found from excavations are also preserved in the Museum of Sarnath. Information about the Jain community of Banaras is also obtained from the Gupta period copper plate (479 AD) found in Paharpur. Presently, the number of Jain families living in Varanasi, belonging to Digambar and Swetambar sects is about 600.

वाराणसी में चार तीर्थंकरों की जन्म स्थली निम्न स्थानों पर है जहां पर दिगम्बर और श्वेताम्बर आम्नाय के मंदिर निर्मित हैं:-

The birthplaces of four Tirthankaras in Varanasi are at the following places where temples of Digambar and Shvetambara sects are built:

- 7 वें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान, भदैनी, वाराणसी
- 7th Tirthankara Suparshvanath, Bhadaini, Varanasi
- 8 वें तीर्थंकर चंद्रप्रभ भगवान, चंद्रावती, वाराणसी
- 8th Tirthankara Chandra Prabha, Chandravati, Varanasi
- 11 वें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ भगवान, सारनाथ, वाराणसी
- 11th Tirthankara Shreyansnath, Sarnath, Varanasi
- 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ भगवान, भेलुपुर, वाराणसी
- 23rd Tirthankara Parshvanath, Bhelupur, Varanasi

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकर जन्म स्थलियां

उत्तर प्रदेश तथा बिहार प्रांत में जैन धर्म के तीर्थंकरों से सम्बंधित अनेक तीर्थ स्थल हैं। जैन धर्म के चौबीस तीर्थंकरों में से 18 तीर्थंकरों की जन्मस्थली होने का गौरव उत्तर प्रदेश को प्राप्त है वहीं छः तीर्थंकरों की जन्मस्थली का सौभाग्य बिहार प्रान्त को प्राप्त है। इसका विवरण इस प्रकार हैः

अयोध्या में पांच तीर्थंकरों (आदिनाथ, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ); वाराणसी में चार तीर्थंकरों (सुपार्श्वनाथ, चंद्रप्रभ, श्रेयांसनाथ और पार्श्वनाथ); हस्तिनापुर में तीन तीर्थंकरों (शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरहनाथ); कौशाम्बी में पद्मप्रभ, श्रावस्ती में संभवनाथ, शौरीपुर बटेश्वर में नेमीनाथ, कम्पिला जी में विमलनाथ, रतनपुरी में धर्मनाथ, काकंदी में पुष्पदंत जी का जन्म स्थान है।

जबकि बिहार प्रांत में राजगिरी में मुनिसुव्रतनाथ, चम्पापुर (भागलपुर) में वासुपूज्य, मिथलापुरी में मल्लिनाथ और नमिनाथ, कोलुआ पहाड़ (भद्रिकापुरी) में शीतलनाथ और कुण्डलपुर में भगवान महावीर का जन्म स्थान है।

Many pilgrimage sites are related to Jain Tirthankaras in Uttar Pradesh and Bihar. Uttar Pradesh has the pride of being the birthplace of 18 out of the 24 Tirthankaras of Jainism, whereas Bihar has the good fortune of being the birthplace of six Tirthankaras. The details are as follows:

Five Tirthankaras (Adinath, Ajitnath, Abhinandannath, Sumatinath and Anantnath) are born in Ayodhya; four Tirthankaras (Suparshvanath, Chandaprabha, Shreyansnath and Parshvanath) are born in Varanasi; three Tirthankaras (Shantinath, Kunthunath and Arahanatha) are born in Hastinapur; Padmaprabha is born in Kaushambi, Sambhavanath is born in Shravasti, Neminath is born in Shauripur Bateshwar, Vimalnath is born in Kampilaji, Dharmanath is born in Ratanpuri and Pushpadantji is born in Kaandi.

While in the state of Bihar, the birthplace of Munisuvratanath is in Rajgrihi, Vasupujya in Champapur (Bhagalpur), Mallinath and Naminath in Mithilapuri, Sheetalnath in Kolua Pahad (Bhadrikapuri) and Lord Mahavira's birthplace is in Kundalpur.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान सुपर्श्वनाथ की जन्म स्थली : भदैनी तीर्थ

Suparshwanath Birthplace : Bhadaini Tirth

आज से हजारों वर्ष पूर्व काशी की इस पुण्य धरा पर सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान का जन्म गंगा नदी के किनारे वर्तमान भदैनी स्थित जैन घाट पर हुआ था। वर्तमान में यहां पर दो दिगंबर एवं एक श्वेतांबर कुल तीन मंदिर गंगा नदी के तट पर स्थित हैं। मंदिर एवं उसमें स्थित अत्यंत मनोरम प्रतिमाएं मूलनायक सुपार्श्वनाथ भगवान के साथ विराजमान हैं। भदैनी स्थित जैन मंदिर का निर्माण सन् 1855-56 ई. में श्री प्रभुदास जैन (आरा) द्वारा नागर शैली में कराया गया था। यहीं पर जैन धर्म की शिक्षा के लिए सन्1905 में स्थापित स्याद्वाद महाविद्यालय भी है।

Thousands of years ago, on this holy land of Kashi, the seventh Tirthankar Lord Suparshvanath was born at the Jain Ghat situated at present Bhadaini on the banks of the river Ganga. At present, there are three temples, two Digambar and one Shwetambar, situated on the banks of the river Ganga. The temple and the extremely beautiful idols situated in it are seated with the main deity Lord Suparshvanath. The Jain temple situated at Bhadaini was built in 1855-56 AD in the Nagari style by Shri Prabhudas Jain (Ara). Here is also the Syadvad Mahavidyalaya established in 1905 for the education of Jainism.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्म स्थली भदैनी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर

आठों दरब साजि गुन गाए, नाचत राचत भगति बढ़ाय।
दयानिधि हो, जय जग बंधु दयानिधि हो।।
तुम पद पूजों मन-वच-काय, देव सुपारस शिवपुर- राय।
दयानिधि हो, जय जगबंधु दयानिधि हो।।
ऊं ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेंद्राय अनर्घ्य पद -प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।

जैन धर्म में श्रावक के पांच गुण हैं जिन्हें पांच अणुव्रत कहा जाता है:
सत्य बोलना, अहिंसा का पालन करना, अस्तेय (चोरी नहीं करना), अपरिग्रह (जरुरत से ज्यादा संग्रह नहीं करना) और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना।
यही श्रावक के लिए पांच अणुव्रत हैं और साधुओं के लिए पंच महाव्रत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

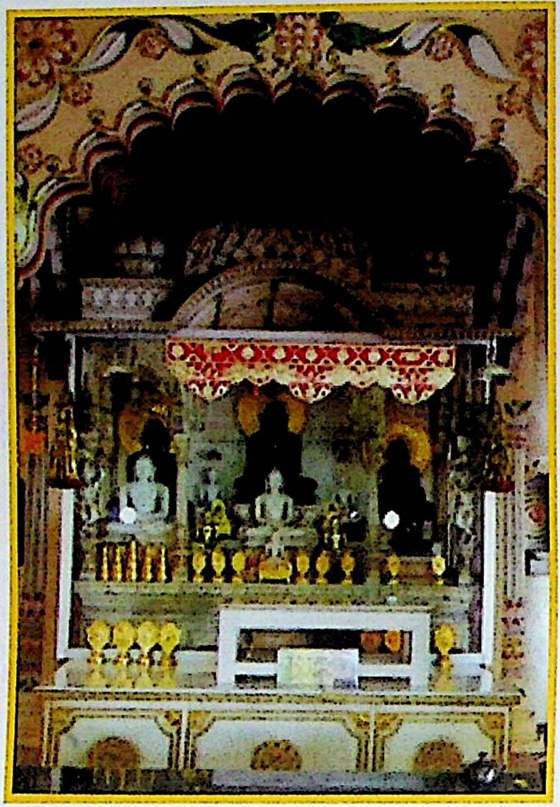

सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्म स्थली भदैनी स्थित छेदीलाल दिगम्बर जैन मंदिर
प्रभूदास घाट, भदैनी, वाराणसी
(इस मंदिर की स्थापना बाबू श्री छेदीलाल जी ने सन 1895 ई. में कराई)

जैनेन्द्र सिद्धांत कोश तथा समणसुत्तं जैसी अमर कृतियों के रचयिता श्री जिनेंद्र वर्णी जी भदैनी स्थित छेदीलाल दिगम्बर जैन मंदिर में रहते और निष्काम भाव से कार्य करते हुए अणुव्रत धारण करके गृह-त्यागी हो गए। आप घर के बजाय मंदिर में रहने लगे। आपके मन में जैन धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा थी तथा कर्म-सिद्धांत पर भरोसा था।

अंतिम समय में आचार्य श्री विद्यासागर जी से ईसरी में आपने क्षुल्लक दीक्षा ग्रहण की और 24 मई, 1983 को पूर्ण चैतन्य अवस्था में सल्लेखना लेकर आचार्य श्री के ही सान्निध्य में ईसरी में समाधिमरण किया। जहां पर आपकी भव्य समाधि निर्मित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

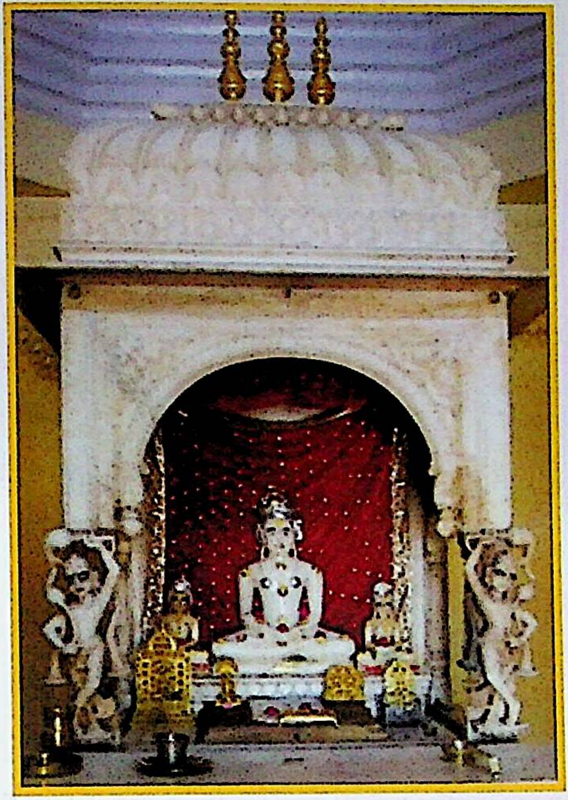

सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्म स्थली भदैनी स्थित श्वेताम्बर जैन मंदिर

Address

Bhadaini Jain Mandir, Near Mata Anandmayi Hospital,
Jain Ghat, Bhadaini, Varanasi – 221 010
Contact no. : 9450374932 (Mr. Surendra Jain)

अनेकांतवाद तथा स्याद्वाद हमें सभी के विचारों का सम्मान करते हुए सर्वधर्म समभाव की सीख देता है। वहीं भगवान महावीर का सिद्धांत 'जियो और जीने दो' प्राणीमात्र के कल्याण की राह दिखाता है। जैन धर्म का 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' का सिद्धांत सभी जीवों पर उपकार एवं भलाई का कार्य करते हुये जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान करता है। आज सम्पूर्ण विश्व के कल्याण के लिये तथा विश्व शांति के लिये अहिंसा ही एक मात्र समाधान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान चंद्रप्रभ की जन्म स्थली : चंद्रपुरी / चंद्रावती तीर्थ

Chandraprabh Birthplace : Chandrawati Tirth

जैन धर्म के आठवें तीर्थंकर भगवान चंद्रप्रभ का जन्म भगवान सुपार्श्वनाथ के पश्चात् काशी की पवित्र भूमि पर हुआ। दोनों के मध्य बहुत लम्बा अंतराल था। चंद्रप्रभ भगवान का जन्म पौष कृष्ण एकादशी को चंद्रपुरी में इक्ष्वाकुवंश के महाराजा महासेन तथा महारानी लक्ष्मणा के यहां हुआ। वर्तमान में यह जन्म स्थली वाराणसी से लगभग 25 किलोमीटर दूर वाराणसी - गाजीपुर मार्ग पर स्थित है। यह स्थान वर्तमान में चंद्रावती के नाम से विख्यात है। गंगा किनारे स्थित यह क्षेत्र एक छोटे से गांव के रूप में है जहां पर दो दिगम्बर और एक श्वेतांबर जैन मंदिर हैं। इसके निकट में एक प्राचीन अल्प उपयोगी जैन धर्मशाला भी है।

विगत वर्ष चंद्रपुरी तीर्थ पर आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज के सानिध्य में पंच- कल्याणक महोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें अनेक नई भव्य रत्नों की प्रतिमायें, नई चौबीसी तथा भगवान चंद्रप्रभ की विशाल संगमरमर की प्रतिमा स्थापित हुई।

भगवान चंद्रप्रभ की जन्म स्थली चंद्रपुरी/ चंद्रावती स्थित दिगम्बर जैन मंदिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Bhagwan Chandraprabh, the eighth Tirthankara of Jainism, was born on the holy land of Kashi after Lord Suparshvanath. There was a long gap between the two. Lord Chandraprabh was born on Paush Krishna Ekadashi in Chandrapuri to Maharaja Mahasen and Maharani Lakshmana of Ikshvaku dynasty. Presently, this birthplace is located about 25 kilometers from Varanasi on the Varanasi-Ghazipur road. This place is currently known as Chandravati. This area located on the banks of the Ganges is in the form of a small village where there are two Digambar temples and one Shwetambar temple. There is also an ancient Jain Dharmashala of little use near it.

Last year, Panch-Kalyanak Mahotsav was held at Chandrapuri Tirtha under the guidance of Acharya Vishuddha Sagar Ji Maharaj. In which many new statues of grand gems, new Chaubisi and a huge marble statue of Lord Chandraprabha were installed.

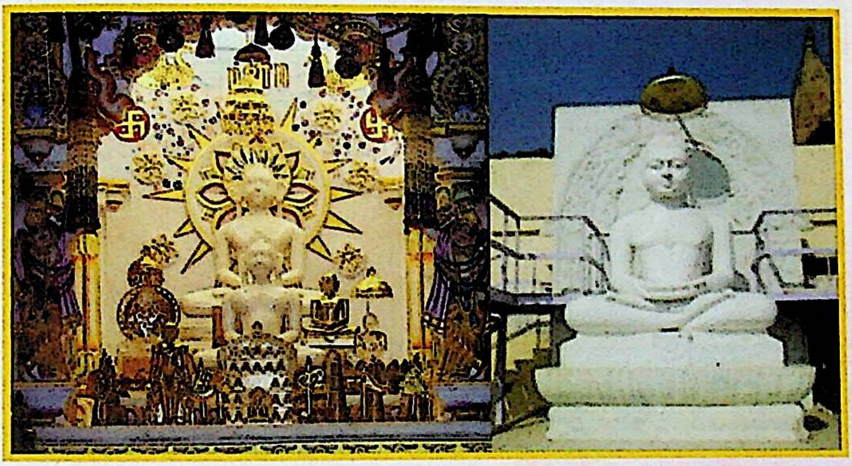

चंद्रपुरी स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में भगवान चंद्रप्रभ की प्रतिमा

सजि आठों- दरब पुनीत, आठों- अंग नमों ।
पूजों अष्टम- जिन मीत, अष्टम -अवनि गमों ।।
श्री चंद्र नाथ दुति- चंद, चरनन चंद लगे।
मन -वच -तन जजत अमंद, आतम ज्योति जगे।।
ऊं ह्रीं श्री चंदप्रभजिनेंद्राय अनर्घ्य पद् -प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

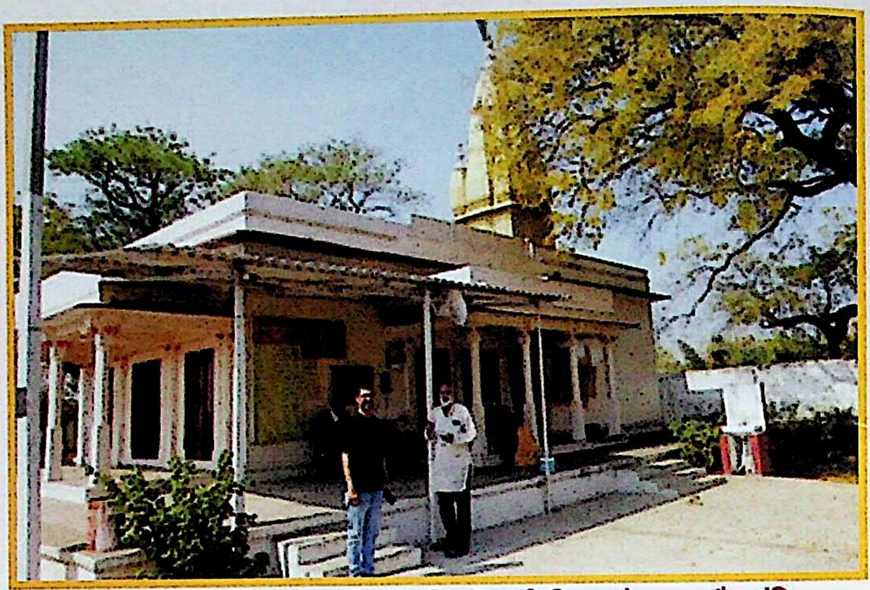

भगवान चंद्रप्रभ की जन्म स्थली चंद्रपुरी/ चंद्रावती स्थित श्वेताम्बर जैन मंदिर

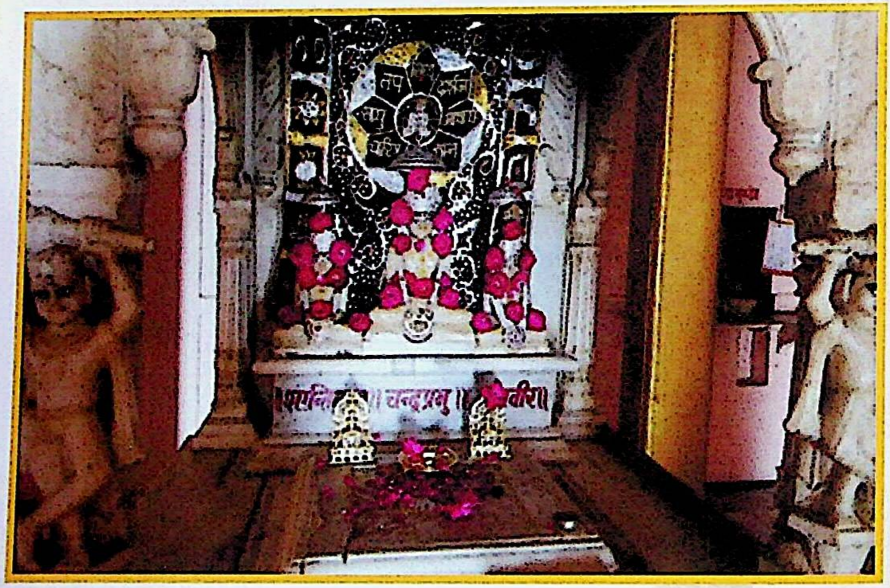

चंद्रावती तीर्थ पर सम्पर्क हेतु सहयोगी :

श्री मक्खन लाल जी जैन : 88960 20442

श्री पंकज जैन : 97943 32780

अहिंसा परमो धर्मः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान श्रेयांसनाथ की जन्म स्थली : सारनाथ तीर्थ
Shreyansanath Birthplace : Sarnath Tirth

जैन धर्म के 11वें तीर्थंकर भगवान श्रेयांसनाथ जी का जन्म सिंहपुरी / सारनाथ में इक्ष्वाकु वंश के महाराजा विष्णु और महारानी नंदा के यहां फाल्गुन कृष्ण एकादशी को हुआ था। सारनाथ में भगवान श्रेयांसनाथ जी के चार कल्याणक हुए तथा अंत में श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष पधारे।

सारनाथ में दिगम्बर और श्वेताम्बर आम्नाय के दो भव्य जैन मंदिर हैं। दिगम्बर जैन मंदिर का निर्माण सन् 1824 ई. में हुआ था। दिगम्बर जैन समाज काशी के सभी सदस्यगण एवं धर्मावलंवी प्रत्येक वर्ष सारनाथ में जाकर भगवान का जन्म महोत्सव भव्यता से मनाते हैं।

सारनाथ स्थित जैन मंदिर का वर्णन ई. 1909 में प्रकाशित डिस्ट्रिक्ट गजेटियर ऑफ बनारस में पृ. 349 पर मिलता है। **(Benares: A Gazetteer, Vol. XXVI, District Gazetteer of the United Provinces of Agra and Oudh, 1909).**

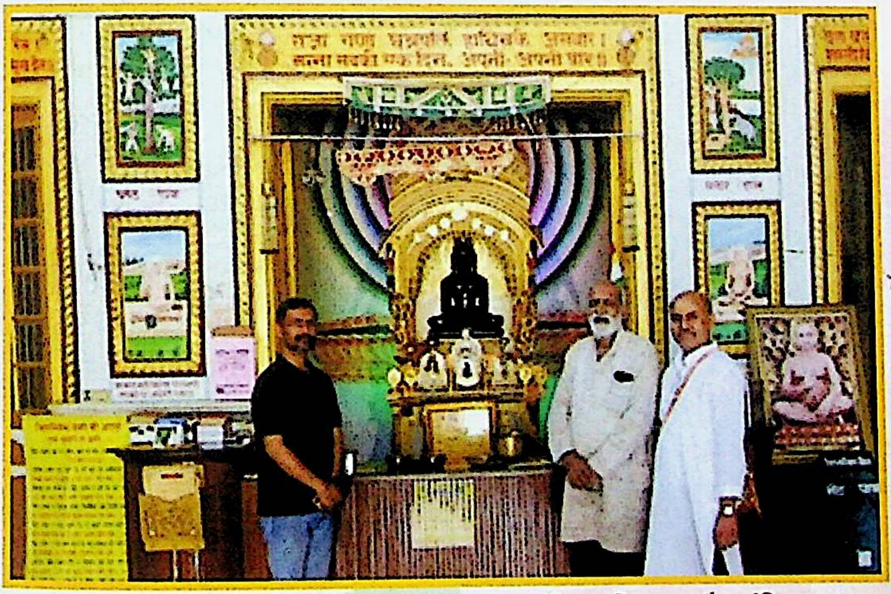

भगवान श्रेयांसनाथ की जन्म स्थली सारनाथ स्थित दिगम्बर जैन मंदिर (बौद्ध स्तूप के निकट), सहयात्रा के दौरान प्रो. मुकुल राज मेहता के साथ लेखक द्वय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Lord Shreyansanath Ji, the 11th Tirthankara of Jainism, was born in Singhpuri/Sarnath to Maharaja Vishnu and Maharani Nanda of the Ikshwaku dynasty on Falgun Krishna Ekadashi. Lord Shreyansanath Ji had four Kalyanaks in Sarnath and finally attained salvation from Shri Sammed Shikhar Ji.

Sarnath has two magnificent Jain temples of the Digambar and Shwetambar sects. Digambar Jain temple was built in 1824 AD. All the members and followers of the Digambar Jain community of Kashi go to Sarnath every year and celebrate the birth festival of the Lord Shreyansnath.

The description of the Jain temple located in Sarnath is found on page 349 in the District Gazetteer of Banaras published in 1909. (Benares: A Gazetteer, Vol. XXVI, District Gazetteer of the United Provinces of Agra and Oudh, 1909).

सारनाथ स्थित भगवान श्रेयांसनाथ की विशाल प्रतिमा
(सारनाथ संग्रहालय के पीछे)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सारनाथ में दिगम्बर जैन मंदिर के सामने उद्यान में भगवान श्रेयांसनाथ जी की विशाल काले पाषाण की प्रतिमा है। यहीं पर चारों तीर्थंकरों की भी अलग अलग वेदी पर प्रतिमायें हैं। पास में ही एक अन्य वेदी पर भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली की मूर्तियां स्थापित हैं।

There is a huge black stone statue of Lord Shreyansnath in the garden in front of the Digambar Jain temple in Sarnath and behind the Museum. Here are the statues of the four Tirthankaras on separate altars. NeaRy, on another altar, there are statues of Lord Adinath, Bharat and Bahubali.

भगवान श्रेयांसनाथ की जन्म स्थली सिंहपुरी तीर्थ, हिरावनपुर, सारनाथ स्थित श्वेताम्बर जैन मंदिर एवं समोशरण मंदिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

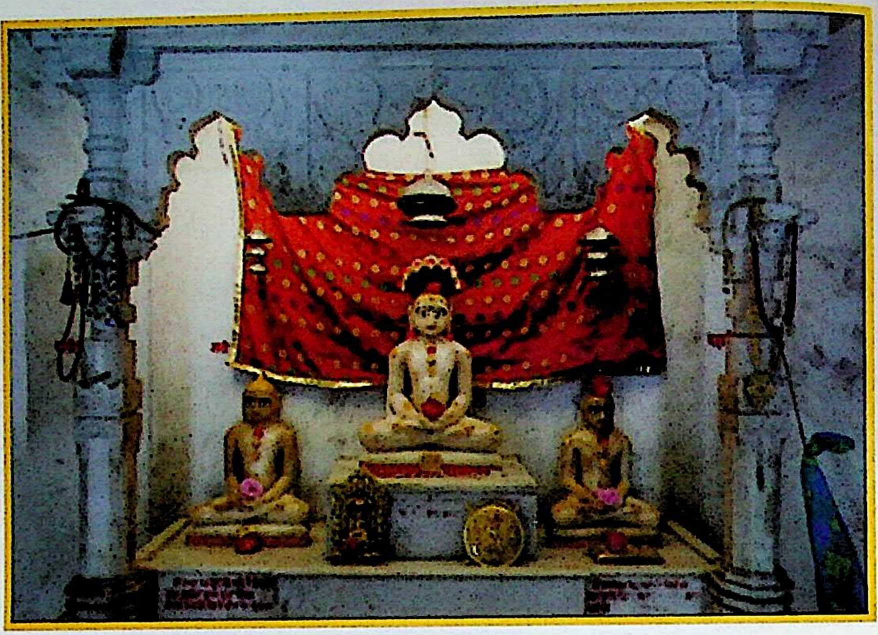

सिंहपुरी तीर्थ, सारनाथ में मूलनायक प्रतिमा

जल मलय तंदुल सुमन- चरु अरु दीप धूप फलावली।
करि अरघ चरचों चरन- जुग प्रभु मोहि तार उतावली।।
श्रेयांसनाथ जिनंद त्रिभुवन वंद्य आनंद- कंद हैं।
दुख -दंद- फंद निकंद पूरनचंद ज्योति- अमंद है।।
ऊं ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेंद्राय अनर्घ्य पद् -प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।

सारनाथ के दिगम्बर एवं श्वेताम्बर मंदिरों के साथ जैन धर्मशालायें यात्रियों की सुविधा के लिए उपल्ब्ध हैं। दौनों मंदिरों के बीच लगभग 2 किलो मीटर की दूरी है। दिगम्बर जैन मंदिर धम्मेख स्तूप के पास में है जबकि श्वेताम्बर मंदिर हिरावनपुर, सारनाथ में स्थित है।

Jain Dharamshalas are available for the convenience of the pilgrims along with the Digambar and Shwetambar temples of Sarnath. The distance between the two temples is about 2 km. The Digambara Jain temple is near the Dhamekh Stupa while the Shvetambara temple is located in Hiravanpur, Sarnath.

सम्पर्क सूत्र : श्री दिलीप जैन (98079 54934)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान पार्श्वनाथ की जन्म स्थली : भेलुपुर तीर्थ

Parshwanath Birthplace : Bhelupur Tirth

जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म लगभग नौवीं शताब्दी ईसा पूर्व (877 ई.पू.) उग्रवंशी काशी नरेश महाराजा अश्वसेन और माता वामादेवी के यहां हुआ था। यहां काशी में भगवान पार्श्वनाथ के तीन कल्याणक हुए तथा अंत में श्री सम्मेद शिखर जी से मोक्ष प्राप्त हुआ। वर्ष 1989 से पूर्व जन्म स्थली पर दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों जैन मंदिर एक ही प्रांगण में थे; अब अलग-अलग प्रांगण में भेलुपुर में ही विशाल भव्य मंदिर एवं धर्मशालायें हैं। जन्म स्थल से खुदाई में प्राप्त मूर्तियों के अवशेष तथा अन्य सामग्री यहां के संग्रहालय में सुरक्षित है।

23rd Tirthankar of Jainism, Lord Parshvanath was born in the ninth century BC (877 BC) to Ugravanshi Kashi Naresh Maharaja Ashwsen and Mata Vamadevi. Three Kalyanaks of Lord Parshvanath took place here in Kashi and finally, he attained salvation from Shri Sammed Shikhar Ji. Before the year 1989, both Digambar and Shwetambar Jain temples were in the same courtyard at the birthplace; now there are huge and magnificent temples and dharamshalas in separate courtyards in Bhelupur itself. The remains of idols and other material found during excavation from the birthplace are safe in the museum here.

भेलुपुर जैन मंदिर वाराणसी शहर के मध्य में स्थित है। यह वाराणसी केंट रेल्वे स्टेशन से लगभग 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां यात्रियों को रुकने की समुचित व्यवस्था है।

Bhelupur Jain Temple is situated in the middle of Varanasi city. It is located at a distance of about 5 km from Varanasi Cantt Railway Station. There is a proper arrangement for the stay of the religious visitors here.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

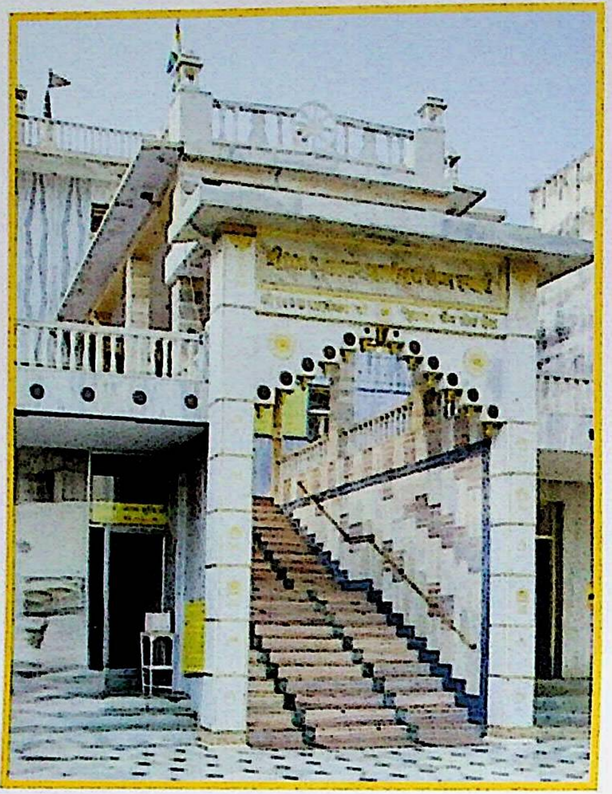

भगवान पार्श्वनाथ की जन्म स्थली भेलुपुर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

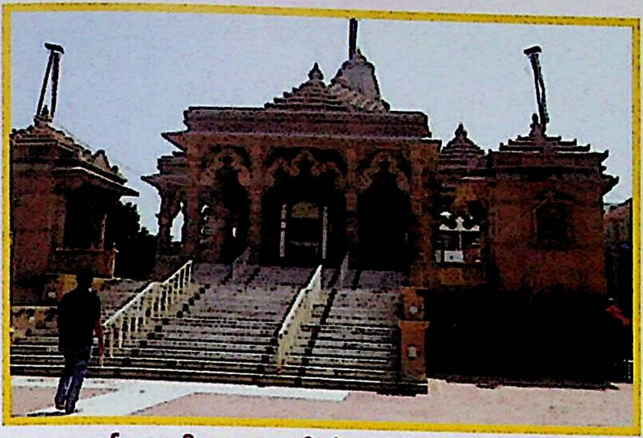

भगवान पार्श्वनाथ की जन्म स्थली भेलुपुर स्थित श्वेताम्बर जैन मंदिर

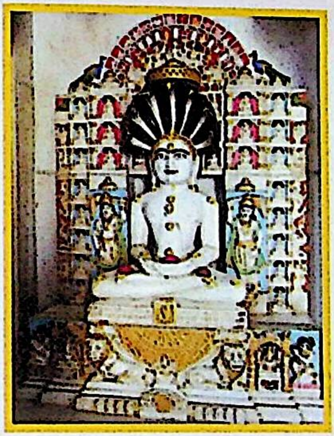

नीर गंध अक्षतान पुष्प चारु लीजिए।
दीप धूप श्री फलादी अरघ तें जजीजिए ॥
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करुं सदा।
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा॥
ऊं ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेंद्राय अनर्घ्य पद -प्राप्तये अर्घ्यं निव. स्वाहा।।

सम्पर्क हेतु पता

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पार्श्वनाथ जन्मस्थली,
भेलुपुर, वाराणसी - 221010 उत्तर प्रदेश
Ph.: 0542- 2275892; 89328 08815; 7317202202 ; 83186 62708
श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ सोसाइटी
B. 20/46 G, भेलुपुर, वाराणसी - 221010 उत्तर प्रदेश
Ph.: 93692 75408 एवं 99353 41068 (प्रमोद मिश्रा)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

खड़ग सेन उदयराज जैन
श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, भेलुपुर

भेलुपुर में ही एक और दिगम्बर जैन मंदिर है जिसकी भूमि को श्री खड़गसेन उदयराज जैन ने सन् 1868 में महाराज विजयनगरम् से मुकदमा जीतकर प्राप्त की और एक नया जन्मभूमि मंदिर का निर्माण करवाया। इस मंदिर में तीन जिन वेदियां हैं जिन पर अनेक अति प्राचीन पार्श्वनाथ, नेमीनाथ तथा चंद्रप्रभ भगवान आदि की मूर्तियां हैं। इसके अलावा एक वेदी पर पद्मावती देवी की विशाल भव्य मूर्ति है।

There is another Digambar Jain temple in Bhelupur whose land was acquired by Shri Khadga Sen Udayraj Jain in 1868 after winning a case against Maharaja Vijayanagaram and he built a new Janmabhoomi temple. There are three altars in this temple on which there are idols of Parshvanath, Neminath and Chandraprabh Bhagwan etc. Apart from this, there is a huge and magnificent idol of Padmavati Devi on one altar.

इस मंदिर जी में आचार्य सन्मति सागर जी का ससंघ चौमासा सन् 1999 में हुआ। उसी समय यहां आचार्य आदिसागर (अंकलीकर), आचार्य महावीर कीर्ति एवं आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज की मूर्तियां स्थापित की गईं हैं।

Acharya Sanmati Sagar Ji's Sangh Chaumasa was held in this temple in the year 1999. At the same time, idols of Acharya Adisagar (Ankalikar), Acharya Mahavir Kirti and Acharya Shri Vimal Sagar Ji Maharaj were installed here.

कविवर पं. बनारसीदास की जीवनी 'अर्धकथानक' में भगवान पार्श्वनाथ जन्मभूमि मंदिर का वर्णन मिलता है। बनारस आकर भगवान पार्श्वनाथ के दर्शन करने के बाद पुजारी के कहने पर उनके पिता ने उनका नामकरण 'बनारसीदास' भगवान पार्श्वनाथ की जन्मस्थल पर रखा था, जिससे वह आजीवन स्वस्थ्य सकुशल रहें।

A description of Bhagwan Parshvanath Janmabhoomi temple is found in the biography of poet Pandit Banarasidas 'Ardha Kathanak'. After coming to Banaras and having the darshan of Lord

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Parshvanath, on the advice of the priest, his father named him 'Banarsidas' after the birthplace of Lord Parshvanath, so that he remains healthy and safe throughout his life.

भेलुपुर स्थित खड़ग सेन उदयराज जैन मंदिर में जिन वेदी एवं पद्मावती माता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली

Nirvana Kalyanaka Places of Jain Tirthankaras

जैन धर्म के तीर्थंकरों से सम्बंधित स्थानों को कल्याणक भूमि कहा जाता है। इसमें जन्म स्थानों के साथ साथ निर्वाण स्थलियों का भी विशेष महत्त्व होता है। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान कैलास पर्वत (अष्टापद) से; वासुपूज्य भगवान चम्पापुरी से; नेमीनाथ भगवान गिरनार पर्वत से और अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर पावापुरी से मोक्ष गए। इसके अलावा शेष बीस तीर्थंकर श्री सम्मेद शिखर जी (मधुबन, झारखण्ड) से निर्वाण को प्राप्त हुए।

The places related to the Tirthankaras of Jainism are called Kalyanak Bhoomi. Along with the birthplaces, the Nirvana Sthals also have special importance. The first Tirthankara Lord Adinath attained salvation from Mount Kailash (Ashtapada); Lord Vasupujya from Champapuri; Lord Neminath from Mount Girnar; and the last Tirthankara Lord Mahavir from Pawapuri. Apart from this, the remaining twenty Tirthankaras attained Nirvana from Shri Sammed Shikhar Ji (Madhuban, Jharkhand).

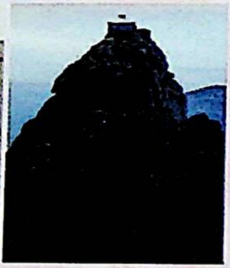
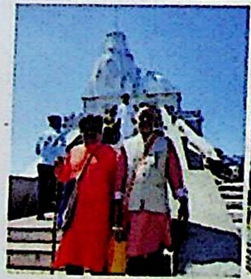
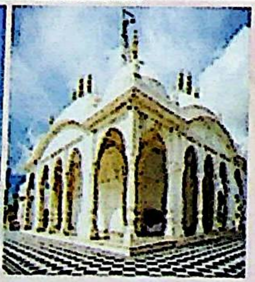

अष्टापद (बद्रीनाथ), चम्पापुरी (भागलपुर), गिरनार जी, सम्मेद शिखरजी एवं पावापुरी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाराणसी के अन्य प्रमुख जैन मंदिर

सन्मति जैन निकेतन

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, नरिया

काशी हिंदू विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए आने वाले छात्रों की सुविधा के लिए कलकत्ता के श्री ज्योतिराम बैजनाथ सरावगी तथा इंदौर के सेठ स्वरुप चंद हुकुम चंद्र ने नरिया में सन्मति निकेतन जैन मंदिर का निर्माण (संवत् 2008, सन् 1951) में कराया। इस कार्य को मूर्त रूप देने में पं. फूलचंद्र सिद्धांत शास्त्री तथा श्री शील चंद्र जी मोदी आदि का विशेष योगदान रहा है। इस मंदिर में भगवान महावीर की अतिशयकारी भव्य मूर्ति के साथ चार अन्य मूर्तियां हैं। नीचे प्रांगण में एक चौबीसी जिनालय तथा एक समोशरण मंदिर विद्यमान है। यहां पर एक छात्रावास था जिसे आधुनिक धर्मशाला में परिवर्तित किया जा रहा है।

For the convenience of students coming to study at Banaras Hindu University, Shri Jyotiram Baijnath Saraogi of Calcutta and Seth Swaroop Chand Hukum Chandra of Indore built the Sanmati Niketan

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Jain Temple in Nariya (Samvat 2008, 1951). Shri Pt. Phoolchand Siddhant Shastri and Shri Sheel Chandra Ji Modi etc. have contributed a lot in giving this work a concrete shape. This temple has four other statues along with the miraculous grand statue of Lord Mahavira. A Chaubisi Jinalaya and a Samosharan temple are present in the courtyard of Jain Mandir. There was an old hostel here which is being converted into a modern Dharamshala.

जिसने बताया जगत को प्रत्येक कण स्वाधीन है।
कर्ता न धर्ता कोई है, अणु-अणु स्वयं में लीन है।
आतम बने परमात्मा, हो शांति सारे देश में।
है देशना सर्वोदयी, महावीर के संदेश में।

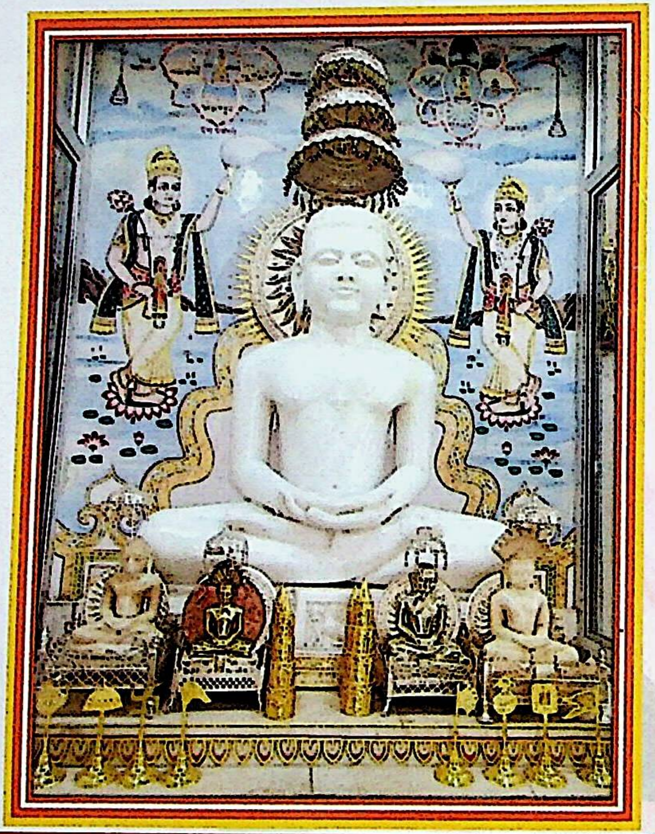

भगवान महावीर का संदेश : जियो और जीने दो।

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री अजितनाथ दिगम्बर जैन मंदिर कश्मीरीगंज, खोजवां, वाराणसी

Shri Ajitnath Digambar Jain Temple Kashmiriganj, Khojwan, Varanasi

यह एक नव निर्मित अति भव्य मनोहर जैन मंदिर है जो कि खोजवां, कश्मीरीगंज में स्थित है। इससे पूर्व यहीं पर एक छोटा सा चैत्यालय था। श्री दिगम्बर जैन समाज के सहयोग से यह 1008 श्री अजितनाथ जिनालय का निर्माण हुआ है। इस मंदिर में भगवान अजित नाथ की मूलनायक प्रतिमा विराजमान है और प्रतिमा के दाईं ओर भगवान आदिनाथ तथा बाईं ओर सहस्त्रफणी भगवान पार्श्वनाथ जी की विशाल प्रतिमाएं विराजमान हैं। इनके अलावा भी अन्य तीर्थंकरों की मूर्तियां हैं।

This is a newly built and magnificent Jain temple located in Khojwan, Kashmiriganj. This temple has the main idol of Lord Ajitnath and the huge idols of Lord Adinath and Parshvanath are also installed on separate altars.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री बिहारी लाल दिगम्बर जैन मंदिर मैदागिन, वाराणसी

Shri Bihari Lal Digambar Jain Temple Maidagin

(मुख्य वेदी मैदागिन जैन मंदिर)

यह बहुत ही प्राचीन जैन मंदिर है जो कि मैदागिन चौराहे पर स्थित है। इस मंदिर जी में मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ के साथ अनेक प्राचीन मूर्तियां हैं। यहां भगवान महावीर तथा भगवान चंदप्रभ की मूर्तियां अलग वेदी पर विराजमान हैं। यहां पर यात्रियों के रुकने के लिए विशाल जैन धर्मशाला है। मंदिर जी के प्रांगड़ में एक मानस्तम्भ है।

This is a very ancient Jain temple located at Maidagin Crossing. This temple has many ancient idols along with the main deity Bhagwan Parshvanath. Here the idols of Bhagwan Mahavir and

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Bhagwan Chandraprabh are placed on separate altars. There is a huge Jain Dharamshala for the stay of the pilgrims. There is a Manastambha in the courtyard of the temple.

मैदागिन जैन मंदिर का भव्य शिखर तथा मानस्तम्भ

वाराणसी के अन्य जैन मंदिर :

- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, हाथी बाजार, कछवां, वाराणसी
- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मुगलसराय
- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, शाहाबाद, राजातालाब

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर
ग्वालदास साहू लेन, वाराणसी

Shri Digambar Jain Panchayati Mandir
Gwaldas Sahu Lane, Bulanala

(मुख्य वेदी : दिगम्बर जैन पंचायती मंदिर)

यह भी एक अति प्राचीन दिगम्बर जैन मंदिर है जो कि मैदागिन के पास ही चौखम्बा में ग्वालदास साहू लेन में स्थित है। इस मंदिर में प्रतिवर्ष जैन समाज द्वारा महावीर जयंती का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। यहां भगवान पार्श्वनाथ की मूलनायक प्रतिमा है।

This is also a very ancient Digambar Jain temple which is located in Gwaldas Sahu Lane in Chaukhamba near Maidagin. Every year in this temple a grand program of Mahavir Jayanti is organized by the Digambar Jain Samaj, Kashi. Here is the main idol of Lord Parshvanath.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, भाट गली, गोलघर, वाराणसी (स्व. श्री धर्मचंद्र जौहरी का निजी चैत्यालय)

Shri Digambar Jain Chaityalaya, Bhat Galli, Golghar

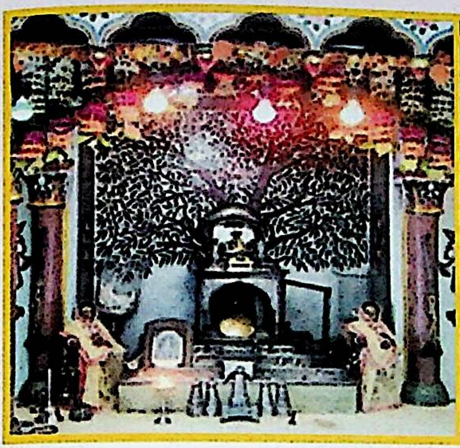
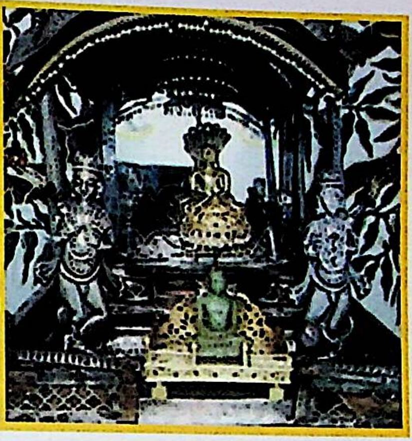

स्व. श्री धर्मचंद्र जी जौहरी (जैन) परिवार के पूर्वजों द्वारा स्थापित लगभग 250 वर्ष प्राचीन यह एक निजी दिगम्बर जैन चैत्यालय है। वर्तमान में श्री सुशील चंद्र जैन, अनिल चंद्र जैन जी के घर पर (भाट गली, गोलघर) में यह दिगम्बर जैन चैत्यालय स्थापित है। यहां पर अति प्राचीन बहुमूल्य दुर्लभ प्रतिमाएं भगवान चंदप्रभ तथा भगवान पार्श्वनाथ जी की विराजमान हैं। जिनके दर्शन प्रातःकाल 9.30 बजे से 11.00 बजे दिन में ही किए जा सकते हैं।

This is a personal Digambar Jain Chaityalaya, which is about 250 years old and was established by the ancestors of late Shri Dharmachandra Ji Jauhari (Jain) family. Presently, this Digambar Jain Chaityalay is established at the house of Shri Sushil Chandra Jain, Anil Chandra Jain (Bhat Gali, Golghar). In this temple you can see very ancient and precious rare idols of Lord Chandraprabh and Lord Parshvanath. The timing for this temple is between 9.30 am to 11.00 am only.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन पंचायती बड़ा मंदिर, रामघाट, वाराणसी

Shri Chintamani Parshwanath Swetambar Jain Panchayati Bada Mandir, Ramghat, Varanasi

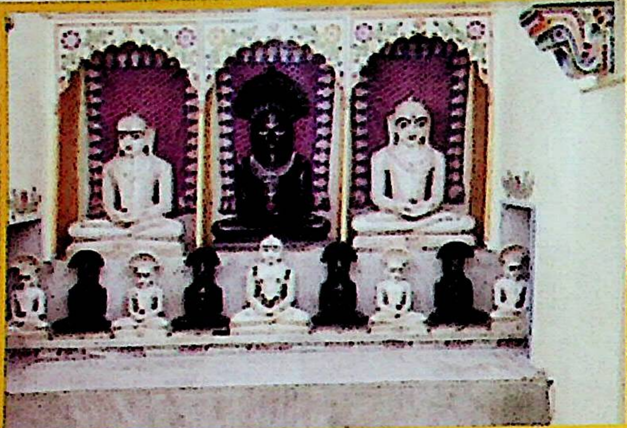

यह मंदिर बहुत ही प्राचीन, विशाल तथा भव्यता से पूर्ण है। यहां जाने के लिए चौक थाने के सामने वाली गली से गंगा नदी की ओर जाना होता है। यह गंगा किनारे राम घाट पर स्थित है। यहां पर चिंतामणि भगवान पार्श्वनाथ की अनेक प्राचीन मूर्तियां हैं। यहां एक चौबीसी, पद्मावती माता की मूर्ति तथा अन्य मूर्तियां भी हैं। इस मंदिर का उत्तुंग शिखर बहुत ही सुंदर है। राजकुमार रूप में भगवान पार्श्वनाथ ने तपस्वी कमठ को ज्ञान देकर नाग-नागिन की रक्षा की और उन्हें णमोकार मंत्र सुनाकर मुक्ति दिलाई। इस घटना का भी यहां चित्रण है।

This temple is very ancient, huge and full of grandeur. To go here, one has to go towards the Ganga river lane in front of Chowk police station. It is located on the Ram Ghat on the banks of the River Ganga. There are many ancient idols of Chintamani Bhagwan Parshvanath here. There is also a Chaubisi, Padmavati Mata idol and other idols here. The lofty peak of this temple is very beautiful.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Bhagwan Parshvanath, in the form of a prince, protected the snake pair by giving knowledge to Kamath Saint and freed them by reciting the Namokar Mantra. This incident is also depicted here.

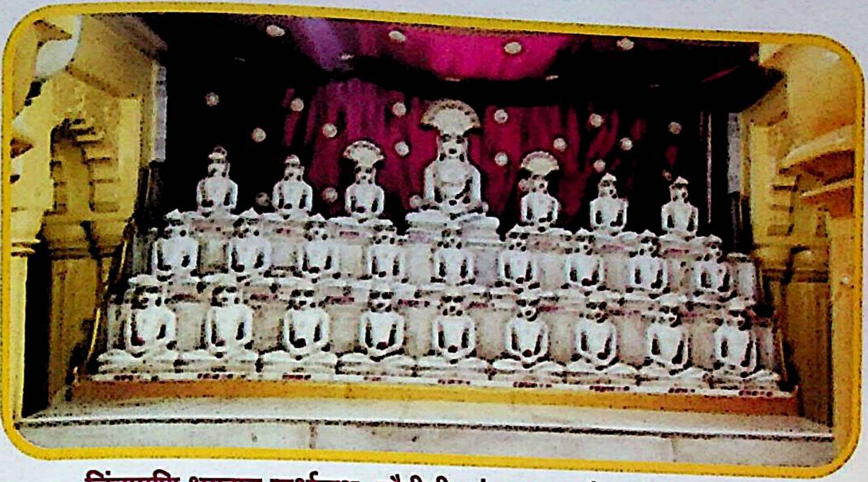

चिंतामणि भगवान पार्श्वनाथ, चौबीसी एवं रामघाट जैन मंदिर का शिखर

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाराणसी के जैन संस्थान

Jain Institutes in Varanasi

स्याद्वाद महाविद्यालय, भदैनी, वाराणसी

Syadwad Mahavidyalaya, Bhadaini, Varanasi

सन् 1905 में पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी द्वारा स्थापित श्री स्याद्वाद महाविद्यालय, भदैनी पर भगवान सुपार्श्वनाथ जी की जन्म स्थली पर संचालित है। एक समय यह जैनदर्शन के अध्ययन की अग्रगण्य संस्था थी। यहां के प्रमुख छात्रों में स्वयं गणेश प्रसाद जी वर्णी जी महाराज, आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज (पं. भूरामल शास्त्री), पं. फूलचंद्र सिद्धांत शास्त्री, पंडित कैलाश चंद्र शास्त्री, प्रो. राजाराम जैन आदि का नाम इस संस्था से जुड़ा हुआ है।

यहां पर एक सुव्यवस्थित जैन ग्रंथालय है। अध्ययन के साथ-साथ यहां पर

स्याद्वाद महाविद्यालय, भदैनी, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन छात्रों के रहने के लिए निःशुल्क छात्रावास की भी सुविधा है। इस महाविद्यालय के माध्यम से छात्र शास्त्री एवं आचार्य की उपाधि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्राप्त करते हैं।

Syadvad Vidyalaya was established in 1905 by Pujya Ganesh Prasad Varni. It is located at the birthplace of Lord Suparshvanath at Bhadaini. At one time, it was a leading institution for the study of Jain philosophy. The names of prominent students here include Ganesh Prasad Varni Maharaj himself, Acharya Gyan Sagar Maharaj (Pt. Bhuramal Shastri), Pt. Phoolchand Siddhant Shastri, Pandit Kailash Chandra Shastri, Prof. Rajaram Jain etc. are associated with this institution.

There is a well-organized Jain library here. Along with studies, there is also a facility of free hostel for Jain students to stay here. Through this college, students obtain the degrees of Shastri and Acharya from Sampurnanand Sanskrit University.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया, वाराणसी

Shri Ganesh Varni Digambar Jain Sansthan, Naria, Varanasi

श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन शोध संस्थान की स्थापना पं. फूलचंद्र सिद्धांत शास्त्री द्वारा जैनदर्शन एवं प्राकृत भाषा, साहित्य के शोध हेतु 1971 में की गई। यहां जैनदर्शन का समृद्ध पुस्तकालय एवं कुछ पांडुलिपियों का संकलन है। वर्तमान में प्रो. अशोक कुमार जैन, रुड़की इसका संचालन कर रहे हैं। वह सिद्धांताचार्य पंडित फूलचंद्र शास्त्री फाउण्डेशन के द्वारा भी इसका सहयोग कर रहे हैं। इस संस्था के अंतर्गत वर्णी ग्रंथमाला से ग्रंथों को नियमित प्रकाशन होता रहता है एवं समय - समय पर व्याख्यानमाला का आयोजन भी किया जाता है। संस्थान का मुख्य उद्देश्य दिगम्बर जैन वांग्मय के विभिन्न पहलुओं पर शोध तथा प्राचीन साहित्य का सम्पादन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एवं प्रकाशन करना है। वर्तमान में इसे प्राकृत अध्ययन केंद्र के रूप में बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ, श्रवणबेलगोला से मान्यता प्राप्त है।

Shri Ganesh Varni Digambar Jain Shodh Sansthan was established in 1971 by Pt. Phoolchand Siddhant Shastri for research on Jain philosophy and Prakrit language and literature. There is a rich library of Jain philosophy and a collection of some manuscripts here. At present, Prof. Ashok Kumar Jain, Roorkee is running it. He is also supporting it through Siddhantacharya Pt. Phoolchand Shastri Foundation. Under this institution, books are regularly published from Varni Granthmala and lecture series are also organized from time to time. The main objective of the institute is to research on various aspects of Digambar Jain literature and to edit and publish ancient literature. At present, it is recognized by Bahubali Prakrit Vidyapeeth, Shravanabelagola as a Prakrit study center.

यहां से 60 से भी अधिक श्रेष्ठ जैन ग्रंथों का प्रकाशन हुआ है जिसमें वर्णी जी की आत्म कथा : मेरी जीवन गाथा, वर्णी वाणी, जैन साहित्य का इतिहास, तत्त्वार्थसार, पंचाध्यायी, देवीदास विलास, तत्वार्थसूत्र आदि प्रमुख हैं।

More than 60 best Jain texts have been published from this institute, in which Varni ji's Atma Katha: Meri Jeevan Gatha, Varni Vani, Jain Sahitya Ka Itihaas, Tattvarth Saar, Panchadhyayi, Devidas Vilas, Tattvarth Sutra etc. are prominent.

यहां से प्रकाशित ग्रंथों को निम्न पते से प्राप्त किया जा सकता हैः

श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, नरिया, वाराणसी - 221005

व्यवस्थापक

श्री अमित जैन

मो. 75050 68516 ganeshvarni105@gmail.com

वेवसाइट : www.varnisansthan.org

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पार्श्वनाथ विद्यापीठ, करौंदी, वाराणसी

Parswanath Vidyapeeth, Karaundi, Varanasi

पार्श्वनाथ विद्यापीठ की स्थापना वर्ष 1937 में जैनाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज की स्मृति में इंडोलॉजी संस्थान के रुप में की गई थी। पार्श्वनाथ विद्यापीठ ने जैन दर्शन, संस्कृति, इतिहास, प्राकृत भाषा, जैन कला आदि पर शोध और प्रकाशन के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किया है। यहां से लगभग 172 श्रेष्ठ ग्रंथों का प्रकाशन हुआ है। इसके अलावा पार्श्वनाथ विद्यापीठ से लगभग 66 विद्वानों ने शोध कार्य पूर्ण करके काशी हिंदू विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। इस संस्थान को काशी हिंदू विश्वविद्यालय से जैनोलॉजी के क्षेत्र में एक अनुसंधान केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस संस्थान को उच्च स्थान दिलाने में प्रो. मोहन लाल जी मेहता, डा. सागरमल जैन आदि का विशेष योगदान है।

Parshvanath Vidyapeeth was established in the year 1937 as an Indology Institute in the memory of Jain Acharya Pujya Shri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Sohanlalji Maharaj. Parshvanath Vidyapeeth has done commendable work in the field of research and publication on Jain philosophy, culture, history, Prakrit language, Jain art etc. About 172 best texts have been published from here. Apart from this, about 66 scholars from Parshvanath Vidyapeeth have completed their research work and obtained PhD degree from Banaras Hindu University. This institute is recognized as a research center in the field of Jainology by Banaras Hindu University. Prof. Mohan Lal Ji Mehta, Dr. Sagar Mal Jain etc. have made a special contribution in giving this institute a high position.

पार्श्वनाथ विद्यापीठ से एक शोध पत्रिका "श्रमण" SHRAMANA निकलती है। इसके अलावा अनेक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन हैं जिसमें शामिल है : जैन साहित्य का बृहद इतिहास (7 खण्ड)। यहां पर एक समृद्ध जैन पुस्तकालय है जिसमें लगभग 30,000 ग्रंथ तथा लगभग 200 पाण्डुलिपियां शामिल हैं।

A research journal "Shramana" is published from Parshvanath Vidyapeeth. Apart from this, there are many important publications which include: Brihad Itihas of Jain Literature (7 volumes). There is a rich Jain library here which includes about 30,000 texts and about 200 manuscripts.

सम्पर्क हेतु

निदेशक, पार्श्वनाथ विद्यापीठ,
आई. टी. आई. रोड, करोंदी, वाराणसी 221005
फोन : 0542- 2318046, 2316521
वेबसाइटः www.pv-edu.org

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन दर्शन विभाग, श्रमण विद्या संकाय, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय

Department of Jain Darshana, Sramana Vidya Faculty, Sampoornanand Sanskrit University

लगभग दो सौ वर्ष से भी अधिक प्राचीन संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय भारत की प्राचीन संस्कृति से संबंधित संस्कृत साहित्य के संरक्षण एवं संवर्धन में योगदान दे रहा है। इस विश्वविद्यालय में श्रमण विद्या संकाय के अंतर्गत जैनदर्शन विभाग तथा प्राकृत एवं जैनागम विभाग स्थित हैं। जिसमें पं.अमृत लाल जी शास्त्री, प्रो. गोकुल चंद्र जैन, डा. फूल चंद्र प्रेमी आदि विद्वानों ने अपनी सेवाएं प्रदान की हैं। वर्तमान में प्रो. हरिशंकर पांडे प्राकृत विभाग में अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

More than two hundred years old Sampurnanand Sanskrit University is contributing to the preservation and promotion of Sanskrit literature related to the ancient culture of India. Jain Darshan Department and Prakrit and Jainagam Department are

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

located under the Shramana Vidya Faculty in this university. In which scholars like Pt. Amrit Lal Ji Shastri, Prof. Gokul Chandra Jain, Dr. Phool Chandra Jain 'Premi' etc. have provided their services. Currently Prof. Harishankar Pandey is providing his services in the Prakrit Department.

संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में प्राचीन संस्कृत ग्रंथों से समृद्ध सरस्वती भवन पुस्तकालय है जहां लाखों की संख्या में हस्तलिखित पांडुलिपियों भी संग्रहित हैं। यहां से लगभग 1250 शास्त्रीय ग्रंथों का प्रकाशन अनेक ग्रंथमालाओं के अन्तर्गत हुआ है जो प्रकाशन विभाग से विक्रय हेतु उपलब्ध रहते हैं।

Sampurnanand Sanskrit University has Saraswati Bhawan Library rich with ancient Sanskrit texts where millions of handwritten manuscripts are also stored. About 1250 classical texts have been published from here under several series which are available for sale from the Publication Department.

फोन : 0542–2204089, 2206617

वेवसाइट : www.ssvv.ac.in

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन-बौद्ध दर्शन विभाग, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय

Jain-Bauddha Darshan Department, Faculty of Sanskrit Vidya Dharm Vigyan, Banaras Hindu University

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी द्वारा स्थापित काशी हिंदू विश्वविद्यालय में शुरु से ही धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को अध्ययन का अनिवार्य अंग बनाया गया इसीलिए सन् 1918 में संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की गई जिसका बाद में नामांतरण प्राच्यविद्या धर्मविज्ञान संकाय हुआ। यही वर्तमान में संस्कृत विद्या धर्मविज्ञान संकाय के नाम से सुविख्यात है।

इसी संकाय के अंतर्गत जैन-बौद्धदर्शन विभाग है जहां पर जैन दर्शन विषय में शास्त्री, आचार्य एवं शोध करने की सुविधा है।

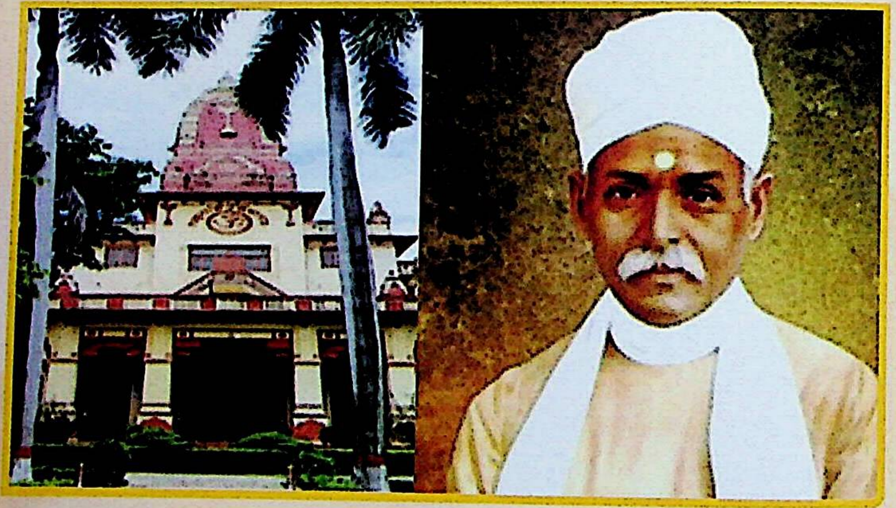

Religious and moral education was made an essential part of the study from the very beginning in Banaras Hindu University established by Mahamana Pt. Madan Mohan Malviya ji and that is why Sanskrit Mahavidyalaya was established in 1918 which was

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

later renamed as Prachya Vidya Dharma Vijnam Sankaya. This is currently well known as Sanskrit Vidya Dharma Vijhana Sankaya (Faculty of Sanskrit Learning and Theology).

Under this faculty, the Department of Jain-Buddhist Philosophy where there is facility to become a Shastri, Acharya and do research in Jain Philosophy.

इस विभाग के प्रतिष्ठित विद्वानों ने पूरे विश्व में जैन दर्शन को ऊंचाइयां प्रदान की हैं। इनमें पद्मश्री पं. सुखलाल संघवी, पद्मभूषण प्रो. दलसुखभाई मालवणिया, प्रो. महेंद्र कुमार जैन न्यायाचार्य, डा. दरबारी लाल कोठिया, प्रो. गोकुलचंद्र जैन, प्रो. उदय चंद्र जैन, प्रो. कमलेश कुमार जैन आदि ने अपनी सेवाएं इस विभाग को प्रदान की हैं वर्तमान में प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह एवं डॉ. आनंद कुमार जैन, जैनदर्शन के विद्वान् के रुप में कार्यरत हैं

The eminent scholars of this department have given great heights to Jain philosophy all over the world. Among them are Padma Shri Pt. Sukhlal Sanghvi, Padma Bhushan Prof. Dalsukhbhai Malvania, Prof. Mahendra Kumar Jain Nyayacharaya, Dr. Darbari Lal Kothiya, Prof. Gokulchandra Jain, Prof. Uday Chandra Jain, Prof. Kamlesh Kumar Jain etc. have provided their services to this department. Presently Prof. Pradyumna Shah Singh and Dr. Anand Kumar Jain are working as scholars of Jain philosophy.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शन एवं धर्म विभाग, कला संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय

Department of Philosophy and Religion, Faculty of Arts, Banaras Hindu University

दर्शन एवं धर्म विभाग, कला संकाय में भी जैन दर्शन का एक वैकल्पिक प्रश्न पत्र स्नातकोत्तर (पी.जी.) स्तर पर पढ़ाया जाता है। यहां पर प्रो. पद्मनाभ एस. जैनी जैसे विद्वान ने अपनी सेवायें प्रदान की हैं। वर्तमान में प्रो. मुकुल राज मेहता जैन धर्म - दर्शन के अध्यापन एवं शोध कार्य में संलग्न हैं।

An optional paper on Jain philosophy is also taught at Post Graduation (P.G.) level in the Department of Philosophy and Religion, Faculty of Arts. Scholars like Prof. Padmanabh S. Jaini have provided their services here. At present Prof. Mukul Raj Mehta is teaching and conducting research on Jain philosophy and religion.

भगवान श्रेयांसनाथ जैन स्टडीज फंड

Bhagwan Shreyanshanath Jain Studies Fund (BSJSF)

जैन धर्म एवं दर्शन की प्रभावना हेतु वर्ष 2022 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में माननीय कुलपति पद्मश्री प्रो. सुधीर कुमार जैन, प्रो. कमलेश कुमार जैन आदि के गौरवमयी उपस्थिति में भगवान श्रेयांसनाथ जैन स्टडीज फंड की स्थापना की गई है। इसके अन्तर्गत वैश्विक स्तर पर जैन धर्म-दर्शन के प्रचार हेतु अंग्रेजी माध्यम से अध्ययन एवं अध्यापन का कार्य होता है। इस फंड के माध्यम से 2022 से 2024 तक अनेक अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय संगोष्ठियां एवं शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, जैसे

1. Sallekhana : A Multidimensional Study
2. Jainism and Tirthankar Mahavir
3. Language, Truth and Reality : Perspectives from Analytic and Jaina Philosophy
4. Jain way of Life : A Multidimentioanl study

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

5. Workshop on Tattvarthasutra
6. A number of invited lectures

इस फंड के वर्तमान में प्रो. मुकुल राज मेहता अध्यक्ष एवं डा. आनन्द कुमार जैन सदस्य सचिव हैं।

Chairman Prof. Mukul Raj Mehta & Member Secretary Dr. Anand Kumar Jain, Bhagwan Shreyansnath Jain Studies Fund, BHU

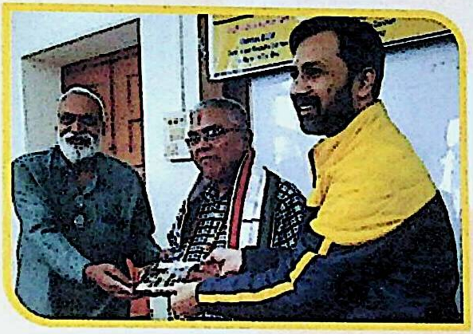

BSJSF, BHU के अध्यक्ष प्रो. मुकुल राज मेहता एवं सदस्य सचिव डा. आनन्द कुमार जैन 'तत्वार्थसूत्र कार्यशाला' दर्शन एवं धर्म विभाग में अतिथि विद्वान का स्वागत-सम्मान करते हुए

To promote Jain philosophy and religion, Bhagwan Shreyansnath Jain Studies Fund has been established in the year 2022 at Banaras Hindu University in the presence of Honorable Vice Chancellor Padmashree Prof. Sudhir Kumar Jain and Prof. Kamlesh Kumar Jain. Under this, study and teaching is done through English medium to promote Jain philosophy and religion at the global level. Through this fund, many international, national seminars and educational programs have been organized from 2022 to 2024. Presently, this fund is chaired by Prof. Mukul Raj Mehta, alongwith Dr. Anand Kumar Jain as Member Secretary.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाराणसी के प्रमुख दर्शनीय स्थल

Main Visiting Places in Varanasi

1. Jain Temples at Tirthankaras Birth places (as described already)
2. Shri Khadagsen Udayraj Jain Mandir, Bhelupur
3. Sanmati Jain Mandir, Naria, Lanka
4. Shri Ajit Nath Jain Mandir, Kashmiriganj, Khojawan
5. Panchayati Jain Mandir, Gwaldas Sahu Lane, Bulanala
6. Shri Bihari Lal Digambar Jain Mandir, Maidagin
7. Shri Chintamani Parswanath Jain, Bada Mandir, Ram Ghat
8. Kashi Viswanath Dham Mandir
9. Sankat Mochan Hanuman Mandir
10. Tulsi Manas Mandir
11. Birla Vishwanath Temple, BHU
12. Durga Mata Mandir, Durgakund
13. Kal Bhairav Mandir
14. Ramnagar Fort
15. Ghats of Ganges
16. Dhamekh Buddha Stupa in Sarnath
17. Kabir Math, Kabir Chaura
18. Sant Ravidas Mandir, Seer Gowardhan
19. Bharat Kala Bhawan Museum, BHU
20. Bharat Mata Mandir, Kashi Vidyapeeth
21. Rani Laxmi Bai Birth place, Assi
22. Swarved Maha Mandir
23. St. Mary's Cathedral, Cantt. Varanasi

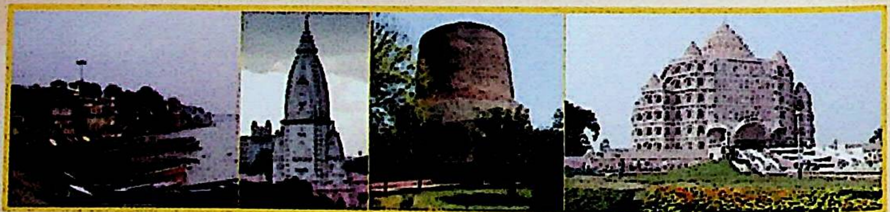

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन धर्म साहित्य हेतु उपयोगी वेबसाइट
Important websites for Jain Literature

वैदिक धर्म, हिंदू धर्म, जैन धर्म आदि के सिद्धांतों को विश्व पटल पर लाने में आधुनिक सूचना तकनीकि का विशेष योगदान है। आज सूचना तकनीकि के प्रभाव से सभी धर्म किसी स्थान विशेष तक सीमित नहीं रहे बल्कि सही मायने में विश्व के धर्म बन गये हैं। अब किसी भी धर्म की कोई भी सूचना, जानकारी कभी भी, कहीं से भी प्राप्त की जा सकती है। यह धार्मिक सूचना का प्रजातांत्रीकरण है और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मर्जी से धर्म को जानने और अपनाने का अधिकार प्राप्त हो गया है।आज डिजिटल लाईब्रेरी एवं धार्मिक संस्थानों की वेबसाइट्स से जैन साहित्य विश्व में कहीं से भी कभी भी देखा और डाउनलोड किया जा सकता है। यहां जैन धर्म से सम्बंधित साहित्य हेतु प्रमुख वेबसाइट की जानकारी दी जा रही है। इसके अलावा इंटरनेट आर्काइव (www.archive.org) पर भी विपुल साहित्य उपलब्ध है।

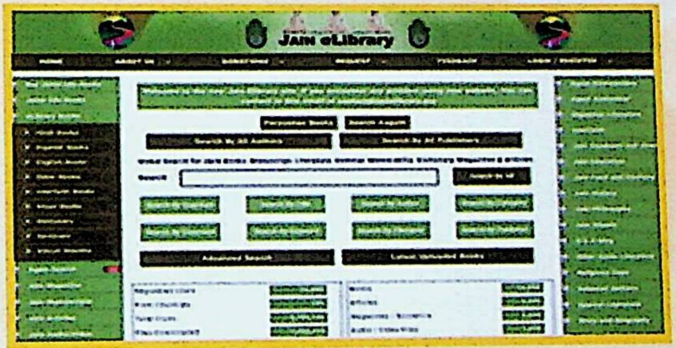

www.jainelibrary.org

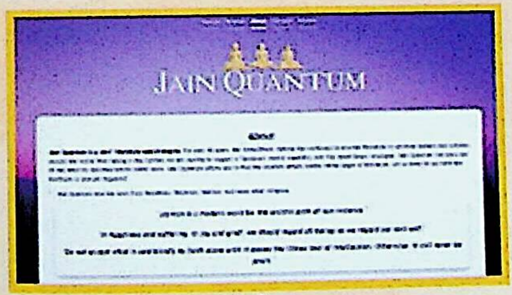

www.Jainqq.org

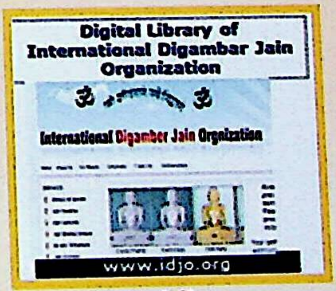

www.idjo.org

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाराणसी : काशी मेरी शान

धर्म ध्यान की नगरी,संस्कृति की खान
गंगा जी के घाट हैं, बनारस की शान ।। 1 ।।
जैनधर्म के पार्श्व सुपार्श्व व चंद्र प्रभ जन्मे गंगा तीर।
श्रेयांसनाथ जी सारनाथ में हर रहे सबकी पीर ।। 2 ।।
कबीर तुलसी रविदास ने किया घाटों पर गुणग़ान
सभी धर्मों में पूज्य हैं, काशी का पावन गंगा धाम ।।3 ।।
देव दीपावली, नाथ नथैया, बुढ़वा मंगलाचार
बनारस के घाटों पर मनते हैं सब त्यौहार ।। 4 ।।
माता शीतला व अन्नपूर्णा देती सबको शुभाशीष
संकट मोचन, बाबा भोले को हम सब झुकाते शीश ।। 5 ।।
पार्श्वनाथ ने नाग नागिन को मंत्र दिया नवकार ।
जियो और जीने दो सबको यही धर्म का सार ।। 6 ।।
सारनाथ में आकर बुद्ध ने किया धर्मचक्र प्रवर्तन
सारे विश्व को दिया शांति और करुणा का दर्शन ।। 7 ।।
तुलसीदास ने लिखी यहीं रामचरितमानस कवितावली
काशी में गूंजी कबीर के दोहे और रविदास की बाणी ।। 8 ।।
दशाश्वमेघ से अस्सी घाट तक होते मंगल जयकार
हरिश्चंद्र और मणिकर्णिका से खुला मोक्ष का द्वार ।। 9 ।।
धर्म सत्य अरु ज्ञान की नगरी तीन लोक से न्यारी है,
इसीलिये सदियों से काशी अमर और अविनाशी है ।। 10 ।।

डॉ. विवेकानन्द जैन

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भगवान पार्श्वनाथ : भजन

श्री पार्श्व स्वामी जी प्रभुवर हमारे, संसार सिंधु के तुम हो किनारे।
बनारस में तुमने जो जन्म लिया है, काशी को तुमने ही पावन किया है।
शिखर जी के पर्वत से तुम मोक्षगामी, जो कि नरक पशु गति से उबारे।
श्री पार्श्व स्वामी जी प्रभुवर हमारे, संसार सिंधु के तुम हो किनारे।

तुम अग्रसेन की पहली लहर है, जाना कहाँ है ये तुझको खबर है।
हमको भी ले ले मुक्ति की मंजिल, हम भी तो बैठे हैं सिंधु किनारे।
श्री पार्श्व स्वामी जी प्रभुवर हमारे, संसार सिंधु के तुम हो किनारे।

धरणेंद्र पद्मावती के आलय तुम्हीं हो, माँ वामाजी के हिमालय तुम्हीं हो।
हमको भी दे दो भक्ति का अर्पण, हम क्षीरोदधि से चरणा पखारें।
श्री पार्श्व स्वामी जी प्रभुवर हमारे, संसार सिंधु के तुम हो किनारे।

कमठ के उपसर्ग विजेता तुम्ही हो, अहिंसा धर्म के मसीहा तुम्हीं हो।
हमको भी दे दो तप की शक्ति, हम भी तो अपना जीवन सुधारें।
श्री पार्श्व स्वामी जी प्रभुवर हमारे, संसार सिंधु के तुम हो किनारे।

श्रीमती प्रीति जैन, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संदर्भ : Bibliography

1. जैन, सत्येंद्र मोहन. दिगम्बर जैन श्री पार्श्वनाथ जन्म भूमि मंदिर भेलुपुर, वाराणसी का ऐतिहासिक परिचय. वाराणसी, 1996.
2. जैन, विवेकानंद. काशी गौरव में जैन धर्म एवं दर्शन का योगदान. प्रज्ञा (काशी गौरव विशेषांक -2). 53(1-2) 2007-08 पृ. 117-120.
3. जैन, सीमा एवं जैन धीरज. जैन कल्याणक क्षेत्र. वाराणसीः श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन संस्थान, 2023.
4. जैन, विवेकानंद (संपा.). बुंदेली रचनावली. वाराणसीः सार्वभौमिक प्राच्य विद्या संस्था, 2021.
5. Benares: A Gazetteer, Vol. XXVI, District Gazetteer of the United Provinces of Agra and Oudh, 1909. pp. 349.
6. Sharma, R C and Ghosal, Pranati (Ed.). Jaina Contribution to Varanasi. New Delhi: D K Printworld, 2006.
7. अर्धकथानक द्वारा पं. बनारसी दास. हीरालाल जैन (संपा.) द्वितीय सं. 1957 पृ. 27.
8. श्री गणेश वर्णी दिगम्बर जैन शोध संस्थान, वाराणसी : www.varnisansthan.org
9. पार्श्वनाथ विद्यापीठ : www.pv-edu.org
10. सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय : www.ssvv.ac.in
11. संस्कृत एवं धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिंदू विश्व विद्यालयः www.bhu.ac.in
12. केजरीवाल, ओम प्रकाश (संपा.). काशी नगरी एक : रूप अनेक. नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार. 2010.
13. जैन, विजय कुमार. वाराणसी के जैन तीर्थ वाराणसी, 2013.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाराणसी जैन तीर्थ-स्थल मानचित्र

भेलुपुर जैन मंदिर (पार्श्वनाथ भगवान की जन्मस्थली) को केंद्र मे रखकर यहां से सारनाथ जैन मंदिर (श्रेयांसनाथ जन्मस्थली) होते हुए चंद्रपुरी जैन मंदिर (चंद्रप्रभ भगवान की जन्मस्थली) जाना ठीक रहता है। भेलुपुर से लगभग 2 किलो मीटर की दूरी पर भदैनी में (माता आनंदमयी आश्रम के पास) सुपार्श्वनाथ भगवान की जन्म स्थली है। यात्री मंदिर के कार्यालय से जानकारी लेकर एवं गूगल मेप की सहायता से सुगम यात्रा कर सकते हैं।

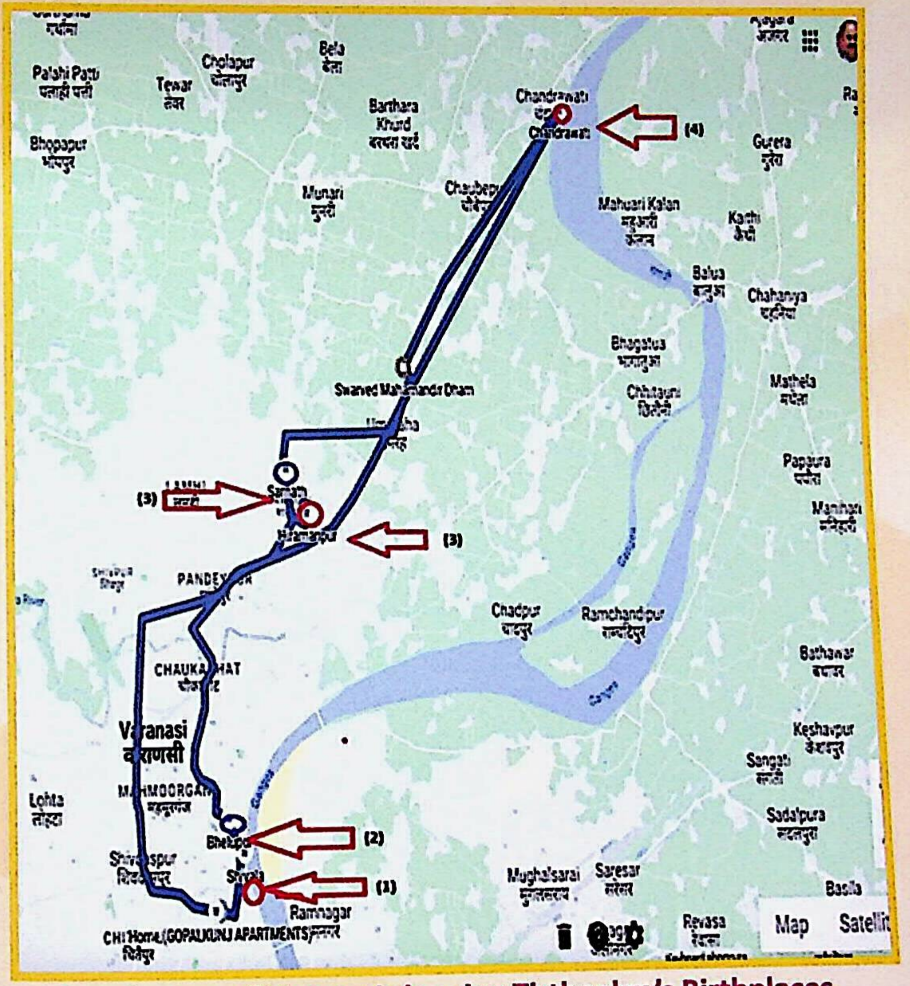

Google map of Varanasi showing Tirthankra's Birthplaces
1.Bhadaini 2. Bhelupur 3. Sarnath & Hiramanpur 4. Chandravati

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आभार

वरिष्ठ प्रोफेसर एवं प्राचार्या डा. इनू मेहता
(19.05.1959 - 15.04.2023)

काशी हिंदू विश्वविद्यालय की वरिष्ठ आचार्या डा. इनू मेहता जी की पुण्य स्मृति में प्रो. मुकुल राज मेहता द्वारा प्रस्तावित 'इनू मेहता एजुकेशन सपोर्ट' फण्ड

उद्देश्य : शैक्षिक प्रयोजन हेतु योग्य व्यक्तियों और संस्थाओं की सहायता
Objective: Support to deserving individuals and institutions in any form for educational purpose.

वर्तमान पुस्तिका इसी के सहयोग से प्रकाशित की जा रही है।

INU MEHTA EDUCATION SUPPORT
C/o Prof. Mukul Raj Mehta
Satvik Bhavan
House No. 9-A, Main Road
Mahamanapuri Colony
VARANASI – 221005
Mob. +91 77850 12424

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

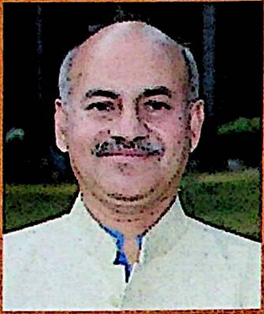

डा. विवेकानंद जैन

डा. विवेकानंद जैन, केन्द्रीय ग्रंथालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में उपग्रंथालयी के पद पर कार्यरत हैं। आपको लगभग 32 वर्षों का कार्य अनुभव है। आपने टी. एफ.आर.आई. जबलपुर तथा एन.आई.सी. नई दिल्ली के पुस्तकालयों में भी कार्य किया है। आप पुस्तकालयों के महासंघ इफला के इंफोर्मेशन टेक्नोलोजी तथा इफला रेलिण्डियल ग्रुप से जुड़े रहे हैं। आपके द्वारा लिखित 3 पुस्तकें तथा 50 से अधिक आलेख प्रकाशित हैं। आपने पुस्तकालय के अलावा जैनधर्म एवं दर्शन पर शोध लेखों का प्रकाशन किया है। आपने मिलान, रोम, पेरिस, जिनेवा, हेलसिंकी, टेलिन, बैंकाक, सिंगापुर आदि की यात्रा की तथा अनेक संगोष्ठियों में भाग लिया। आपने कैथोलिक यूनीवर्सिटी पेरिस में भी जैन धर्म दर्शन पर व्याख्यान दिया।

डा. आनन्द कुमार जैन

डा. आनन्द कुमार जैन, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में वरिष्ठ सहायक अध्यापक, जैन-बौद्धदर्शन विभाग में कार्यरत हैं। आपको लगभग 15 वर्षों का कार्य अनुभव है। आपने राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (केन्द्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय) जयपुर में भी कार्य किया है। आप नवम्बर 2019 से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में सेवा प्रदान कर रहे हैं। आप भगवान श्रेयांसनाथ जैन स्टडीज फंड, बी.एच.यू. में सदस्य सचिव हैं। आपने अनेक संगोष्ठियों का संचालन तथा आलेख वाचन किया है। प्राकृत भाषा में योगदान हेतु राष्ट्रपति पुरुस्कार से 2018 में सम्मानित हैं। आप अनेक जैन संगठनों से जुड़े हुये हैं जिसमें भारतीय जैन मिलन, अखिल भारत वर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत परिषद, अखिल भारत वर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद प्रमुख हैं। आपके द्वारा जैनधर्म एवं दर्शन पर संदर्भ ग्रंथों, पुस्तकों तथा 30 शोध आलेखों का प्रकाशन हुआ है।

Published with financial
assistance from:

INU MEHTA EDUCATION SUPPORT
Varanasi – 221005

ISBN : 978-93-341-4900-5

978-93-341-4900-5

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi